ज्ञानामृत

मार्च, 1981
वर्ष 16 ❋ अंक 10
मूल्य 1.75

विश्व-कल्याण महोत्सव की महान शोभा यात्रा से पहले देहली के अम्बेडकर स्टेडियम में बैठे १५००० ब्रह्माकुमारी बहनों और ब्रह्माकुमार भाइयों के समक्ष शिव बाबा की झण्डी लहराते हुए दिखाई दे रही हैं— (बायें से दायें) बहन सेली स्विग शैली (राष्ट्र संघ की गैर-सरकारी संस्थाओं के संगठन की प्रधान) ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि जी (ई० वि० वि० की मुख्य प्रशासिका), ब्रह्माकुमारी मनमोहिनी जी (अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका) तथा ब्रह्माकुमारी वृज इन्द्रा जी (महाराष्ट्र मण्डल की इंचार्ज)

विश्व-कल्याण महोत्सव से कुछ काल पहले भारत की प्रधान मन्त्री इन्दिरागाँधी जी को 'सर्व धर्मों के पिता' (परमात्मा शिव) का चित्र भेंट करते हुए प्रधान मंत्री के साथ बहन शकुन्तला सुल्हन तथा ब्रह्माकुमारी आशा जी, चक्रधारी जी तथा दादा किशन चन्द दिखाई दे रहे हैं।

पिछले दिनों प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की ओर से लाल किला मैदान पर एक अद्भुत अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ जिस में देश-विदेश के प्रवक्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गयी जो लगभग ३ किलोमीटर लम्बी थी। उसमें १५ ज्ञानप्रद, प्रेरणाप्रद झांकियाँ भी थीं जो कि अति उच्च श्रेणी की थीं।

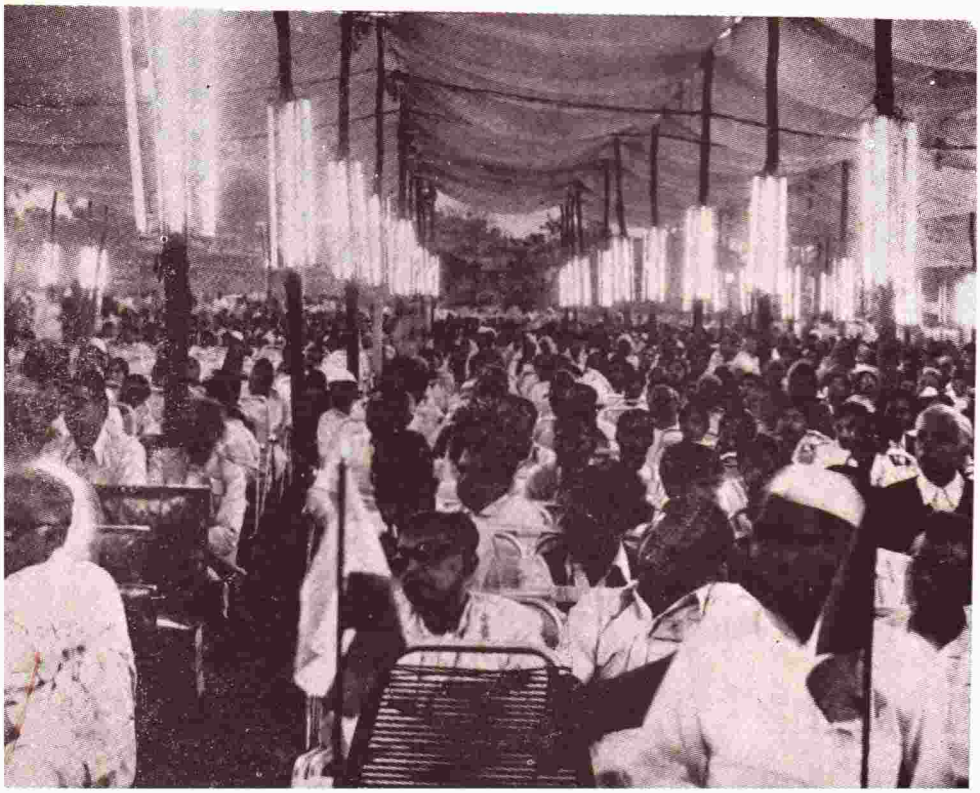

लाल किला मैदान, दे ली में हुए विश्व कल्याण महोत्सव के विशाल सभा मण्डप में बैठे हुए श्रोताओं का एक दृश्य। यह पण्डाल इतना विशाल था, कि देहली के कई लोगों का कहना है कि उन्होंने देहली में पहले कभी इतना विशाल श्वेत मण्डप नहीं देखा। न ही इस प्रकार इतनी बड़ी सभा में अनुशासन देखा है।

अमृत-सूची

१. स्नेह, संगठन और सेवा (सम्पादकीय)	२	११. चाहत ही पूरी हो गई तो क्या चाहिए	२३
२. वह कौन है ? (कविता)	३	१२. सेवा समाचार चित्रों में	२५
३. विश्व परिवर्तन की आधार शिला 'शिवरात्रि'	४	१३. धर्म ग्लानि एक तार्किक विवेचन	२७
४. सेवा समाचार चित्रों में	७	१४. सतयुग और सतोप्रधान प्रकृति	२९
५. नया जीवन	९	१५. गीत	३२
६. सेवा समाचार चित्रों में	१५	१६. सेवा समाचार चित्रों में	३३
७. भेंट वर्ता	१७	१७. धुम्रपान-आध्यात्मिक व स्वस्थ शरीर की दृष्टि में	३५
८. मीठी वाणी बोलिए सब को सुख दीजिए	१९	१८. पवित्रता की और (कविता)	३८
९. आत्म-अन्वेषन	२०	१९. स्मृति दिवस तथा शिव जयन्ती पर की गई ईश्वरीय सेवाएं	३९
१०. परमप्रिय परमपिता परमात्मा निराकार शिव बाबा की मधुर याद में (कविता)	२२		

आवश्यक सूचना

अभी तक कई सैन्टरज़ से ज्ञानामृत तथा वर्ल्ड रीन्युअल का वार्षिक शुल्क प्राप्त नहीं हुआ है, कृपया शीघ्र शुल्क भेजें, नहीं तो पत्रिकायें भेजना रोक दिया जाएगा।

—व्यवस्थापक

प्रकाशन सम्बन्धी विवरण

१. **प्रकाशक स्थान**	देहली
२. **प्रकाशन अवधि**	मासिक
३. **मुद्रक का नाम**	जगदीश चन्द्र हसीजा
४. **पता**	151-ई कमलानगर, दिल्ली-7
५. **क्या भारत का नागरिक है ?**	हाँ
६. **प्रकाशक का नाम**	जगदीश चन्द्र हसीजा
७. **क्या भारत का नागरिक है ?**	हाँ
८. **पता**	151-ई, कमलानगर, देहली-7
९. **सम्पादक का नाम**	जगदीश चन्द्र हसीजा
१०. **पता**	वही

१६-३-८१

स्नेह, संगठन और सेवा

गीता में एक जगह पर लिखा है कि भगवान ने कहा—"हे अर्जुन, जो मुझे श्रद्धा या भावना से पत्र अथवा पुष्प अर्पित करते हैं, मैं उनकी उस भावना को स्वीकार करता हूँ क्योंकि मैं तो उनके प्यार को देखता हूँ।"[1] हम भी यह समझकर विश्व-कल्याण महोत्सव के बारे में अपने आध्यात्मिक बहन-भाइयों को 'पत्र-पुष्प' भेजते रहे, क्योंकि हमने सोचा कि जब भगवान ही पत्र-पुष्प स्वीकार कर लेते हैं तब भगवान के बच्चे भी तो यह स्वीकार करेंगे ही। परन्तु उस पत्र में तो कोमलता भी होती है, हरियाली भी और अपने प्रकार का स्वाद भी और उस पुष्प में सुगन्धि भी होती है और सौन्दर्य भी; किन्तु हम जो 'पत्र-पुष्प' भेजते रहे, उसमें तो इन गुणों का अभाव ही रहा होगा। तो भी हम भेजते तो रहे ही। परन्तु शिव बाबा के सब बच्चों की कमाल है कि उन्होंने पत्र-पुष्प का ख़याल करते हुए स्नेह का उत्तर स्नेह से दिया कि वे स्वयं भी देहली में पधारे। अतः बाबा ठीक ही तो कहते हैं कि स्नेह ही संगठन बनाने वाला सूत्र है।

▭ ▭ ▭

पत्र और पुष्प की चर्चा करते हुए हमें शिव बाबा और ब्रह्माबाबा की याद आती है। बाबा इन दो शब्दों से बहुत-से बहन-भाइयों के जीवन में परिवर्तन ले आये। एक बार का किस्सा इस तरह है कि मधुबन में बाबा की क्लास समाप्त हुई तो बाबा ने एक बहन को फूलों की एक प्लेट लाने के लिए कहा जो कि बाबा के आदेश के अनुसार ही पहले से तैयार रखी हुई थी। जब वह बहन प्लेट ले आई तो बाबा ने कहा—"देखो बच्चे, ये मधुबन के बग़ीचे के कितने अच्छे फूल हैं! आज बाबा आप बच्चों को फूल देता है।" फिर बाबा ने मुस्कुराते हुए उस बहन को कहा कि जो बच्चा जितना खिला हुआ फूल है अथवा जिस बच्चे में जितनी सुगन्ध है, उसे वैसा ही फूल देना। जिसे फूल बाँटने के लिए कहा गया था, उसके कदम और हाथ रुक गये और वह मुस्कुराते हुए बाबा की ओर देखने लगी और सभा में बैठे हुए सभी बहन-भाइयों के चेहरों पर भी मुस्कुराहट आ गई। उस मुस्कुराहट में जिज्ञासा भी भरी हुई थी क्योंकि हरेक के मन में यह चल रहा था कि देखें, हमें कौन-सा फूल दिया जाता है। इस सारे वृत्तान्त में एक-दो मिनिट भी नहीं लगे होंगे कि इसी बीच एक-दो बहनों की हंसी छूट गई और बाबा भी धीमे-धीमे हंस पड़े और बोले—"यहाँ तो बाबा सबको सम्मान देते हैं, इसलिए बाबा किसी को भी सुगन्धि-हीन फूल नहीं देंगे भले ही अभी कोई पूरी तरह से काँटे से फूल न बना हो; भले ही कोई अभी तक कली हो और ज्ञान से पूरा न खिला हो अथवा भले ही कोई खिलकर भी मुरझाने लगा हो परन्तु बाबा सदा आपको फ्रेश (fresh) और सुगन्धि वाले ही फूल देंगे क्योंकि बाबा सदा आप बच्चों को रिफ्रेश (Refresh) देखना चाहते हैं और सदा ही खिला हुआ और मुस्कुराता हुआ देखना चाहते हैं।" यह बात सुनकर हर कोई अन्तर्मुखी होकर यह सोचता हुआ मालूम होता था कि हम ईश्वरीय ज्ञान और योग के द्वारा सदा हर्षित-मुख बनेंगे और जन-जन को ऐसे प्यारे बाबा का 'पवित्र बनो और योगी बनो' वाला सन्देश अपने जीवन में दिव्य गुणों की सुगन्धि भर कर देंगे। बाबा की उस थोड़ी ही वार्ता का ऐसा प्रभाव देखने को

१. पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥ ११-६-२६

मिलता कि हर कोई खुशी से नाचता हुआ मालूम पड़ता क्योंकि सब यही सोचते कि बाबा का इशारा ही काफ़ी है; सचमुच हमें सुगन्धि वाला ही फूल बनना चाहिए।

▭ ▭ ▭

शायद कुछ लोग ऐसे हों जो यह सोचते हों कि हम तो सेवा कर ही नहीं पाते क्योंकि अब हमारी जर्जरा अवस्था है अथवा अमुक-अमुक कारण हैं। शायद उन्हीं को ख़्याल में रखकर बाबा कहते—"बाबा को सभी बच्चे बहुत ही प्यारे लगते हैं। बाप को सदा बच्चे प्यारे होते ही हैं और ये तो रूहानी बच्चे हैं। इसलिए रूहानी बाप की इन सब पर मीठी ही दृष्टि है। भले ही कुछ बच्चों में अभी पूरा ज्ञान नहीं है और वे ईश्वरीय सेवा भी नहीं कर पाते परन्तु वे बाबा के तो बने ही हैं और उन्हें इस दैवी परिवार का संग तो मिला ही है। अतः वे भी इस ईश्वरीय परिवार की शोभा ही हैं।" इस बात को स्पष्ट करते हुए बाबा गुलदस्ते का उदाहरण देते और कहते—"देखो बच्चे, गुलदस्ते में फूलों के आसपास पत्ते भी तो होते ही हैं। पत्तों के बिना भी गुलदस्ते की शोभा नहीं होती। इसी प्रकार शिव बाबा के सभी बच्चे, जिन्होंने शिव बाबा का हाथ और साथ लिया है, वे भी तो इस ईश्वरीय परिवार के ही हैं।

इस प्रकार बाबा पत्र और पुष्प द्वारा सेवा किया करते।

—जगदीश

वह कौन हैं ?

लेखक राजू, गुमला

वायु-से हल्के
कस्तूरी-से सुरभित
सुमनों-से आकर्षक,
हैं कौन वो खींचते बारंबार !
वह कौन हैं जिनकी महिमा
नित करते थे साकार ?
जिनकी केवल एक झलक
मिल जाए कहती है पलक
केवल एक इशारे जिनके,
करते नैया पार !
वह कौन हैं जिनको ख्वाबों में
रत रहते थे साकार ?
कौन हमें प्रतिपल निज उर में
कौन हमें उस सूक्ष्मपुर में
आमंत्रित करते संगमयुग में,
मौन गुमसुम शब्दों से बुलाते बारंबार !
वह कौन हैं जिनकी यादें
तड़पाती बारंबार ?

बोलो बंधुवर कौन हैं वो
शिव कल्याणी जगत-पिता ?
या मधुबन वाले साकार
कौन जगाते प्रतिपल हमको,
किसके स्नेह में खो जाते हम
जो हैं अपने प्राणाधार ?

जिसे ढूंढ़ते थे वन-वन में
कौन हैं रहते प्यारे मधुबन में
कौन पधारे ब्रह्मा-तन में
निश दिन मुरली-ज्ञान सुनाते
अपने कर कमलों से बसाते
प्यार भरा संसार ?

क्या समझे—नहीं समझे—
वो हैं सबके प्राण प्रिय मीठे-मीठे शिव बाबा
ज्योतिर्लिंगम निराकार !

विश्व परिवर्तन की आधार शिला 'शिवरात्री'

ले० ब्रह्माकुमारी मंजु

परिवर्तन प्रकृति का स्वाभाविक नियम है। लेकिन फिर भी परिवर्तन के लिए मानव प्रयास करता ही है और आज तो हम उन परिस्थितियों से गुजर रहे हैं जबकि हर मानव की अन्तरात्मा की यही आवाज़ है कि अब तो इस विश्व में कुछ जल्दी से ही परिवर्तन होना चाहिए क्योंकि आज धर्म सत्ता और राज्य सत्ता दोनों ही शक्तिहीन हो गए हैं। मानव दुःख को सुख में अशान्ति को शान्ति में, घृणा को प्रेम में, अज्ञान को ज्ञान में परिवर्तन कर पवित्रता-सुख-शान्तिमय जीवन व्यतीत करना चाहता है। सर्व आत्माओं की मनोकामना पूर्ण करने वाला एक परम-पिता परमात्मा ही है जिसके अवतरण की यादगार हर वर्ष 'शिवरात्रि' के रूप में मनाते हैं।

शिवरात्री एक सार्वभौम त्यौहार

यदि शिवरात्री के आंचल में छिपे आध्यात्मिक रहस्य को पूर्ण रूप से जान जायें तो विश्व परिवर्तन सहज ही हो सकता है। क्योंकि शिवरात्री सिर्फ शैव सम्प्रदाय के भक्तों का पर्व नहीं है लेकिन सारे विश्व के प्रमुख धर्म, प्राचीन सभ्यता और प्राचीन संस्कृति को देखें तो स्पष्ट होता है कि यह पावन पर्व विश्व की सर्वात्माओं के लिए ही है। उदाहरण के तौर पर महाभारत (आदि पर्व) में भी लिखा है कि, "सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अन्धकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रगट हुई और वह ज्योतिर्लिंग ही नये युग की स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया।" मनुस्मृति में भी यही लिखा है कि "सृष्टि के आरम्भ में एक अण्ड प्रगट हुआ जो हजारों सूर्यों के समान तेजस्वी और प्रकाशमान था।" इसी प्रकार शिव पुराण में 'धर्मसंहिता' में लिखा है कि, "कलियुग के अन्त में प्रलयकाल में एक अद्भुत ज्योति लिंग प्रगट हुआ जो कि कालाग्नि के समान ज्वालामान था, वह न घटता था और न बढ़ता था, वह अनुपम था और उस द्वारा ही सृष्टि का आरम्भ हुआ।" देखा जाय तो सिर्फ भारत के धर्म ग्रन्थों में ही नहीं बल्कि यहूदी, ईसाई, मुसलमानों की पुरानी धर्म पुस्तक 'तोरेत' का आरम्भ भी ऐसे ही होता है, सृष्टि संरचना की प्रक्रिया इस प्रकार से है कि सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर की आत्मा पानी पर डोलती थी और आदि-काल में परमात्मा ने ही आदम और हव्वा को बनाया जिसके द्वारा स्वर्ग बना। भगवान् का नाम 'जिहोवा' मानते हैं जो कि शिव का ही पर्यायवाची है। भारत के तो कोने-कोने में शिव की ही यादगार है। पूरब (काशी) में विश्वनाथ, उत्तर में अमरनाथ, दक्षिण में रामेश्वर, पश्चिम में सोमनाथ, उज्जैयनी में महा-कालेश्वर, हिमालय में केदारनाथ, हिसार में वैद्यनाथ, मध्य प्रदेश में ओंकारनाथ, द्वारिका में भुवनेश्वर आदि-आदि, केवल भारत में ही नहीं लेकिन भारत से बाहर विश्व की प्रमुख संस्कृतियों पर शिव की छाप है, जैसे नेपाल में पशुपतिनाथ— इसी प्रकार से बेबीलोन, मिस्र, यूनान और चीन में भी किसी समय शिव की मान्यता किसी-न-किसी नाम से थी। बेबीलोन में शिव को शिउन' कहा जाता है। मिस्र में 'सेवा' नाम से पूजा होती, रोम में 'प्रियप्स' कहते हैं। इटली के गिरिजा घरों में आज भी शिव की प्रतिमा पाई जाती है। चीन में शिवलिंग को 'हुवेड हिफुह' कहा जाता है। यूनान में 'फल्लुस', अमेरिका के पुरुविया नामक स्थान में आज भी ईश्वर

को 'शिवु' कहते तथा काबा में भी पहले शिव की प्रतिमा थी—सो शोधकर्ताओं का कहना है कि 'काबा कभी शिवालय' था। इससे सिद्ध होता है कि शिव-पिता परमात्मा ने विश्व के कल्याणकारी परिवर्तन के लिए ऐसा विशेष कार्य किया है। इसीलिए आज तक शिव की विश्व व्यापी मान्यता है।

शिवरात्री का महात्म्य

'शिव और रात्री' के वास्तविक रहस्य को न जानने के कारण आज शिवरात्रि का इतना महत्त्व विश्व में नहीं है। तो अब हम शिवरात्रि की विशेषता पर ही दृष्टिपात करेंगे। यूँ तो २४ घंटे में एक बार रात्रि आ ही जाती है परन्तु भारतीय जनजीवन में तीन रात्रियों का विशेष महत्त्व है—वे हैं शिव-रात्रि, नवरात्रि और दीपावली। यहाँ पर विशेष रूप से इस बात पर विचार करेंगे कि वर्ष भर की अन्य तीन सौ त्रेसठ रात्रियों में और शिवरात्रि में विशेष क्या अन्तर है जिसके कारण उनका महत्त्व न होकर शिवरात्रि को एक 'विशेष पर्व' के रूप में अथवा एक पवित्र वरदान देने वाली रात्रि के रूप में मनाते हैं और शिवरात्रि पर किसी भी तरह जागते रहने की कोशिश करते हैं परन्तु प्रश्न उठता है कि वर्ष में केवल एक ही बार जो शिवरात्रि का उत्सव मनाया जाता है तो क्या यही वास्तविक शिवरात्रि है? यदि हाँ, तो इसका अर्थ यह होगा कि हम वर्ष की बाकी रात्रियों में भले ही तमोगुण के वशीभूत हुए रहे और 'शिवपिता' को भूले रहे तथा विकर्म करते रहे और शिवरात्रि के आने पर एक बार निर्जल उपवास, जागरण तथा शिव स्तुति कर लिया करें। यह तो वही बात हुई कि, "नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चलो"—स्पष्ट है कि हर वर्ष भक्तगण जो शिव-रात्रि मनाते हैं, यह तो वास्तविक शिवरात्रि की धुँधली-सी यादगार है। शिव की रात्रि कोई इस बारह घंटे की रात्रि नहीं होगी बल्कि बात कुछ और ही होगी। अतः इसका रहस्य जानने की जरूरत है।

'शिव' परमात्मा का नाम है और शिव शब्द कल्याण का ही वाचक है।

चूंकि यह पर्व परमात्मा शिव के दिव्य जन्म के स्मरणोत्सव के रूप में मनाया जाता है और 'शिव' के कार्य के फलस्वरूप विश्व का कल्याणकारी परिवर्तन हुआ। इसलिए भी इसका नाम 'शिवरात्रि' है। 'शिव' परमात्मा द्वारा कल्याण कार्य के स्मरणोत्सव को 'रात्रि' शब्द से क्यों युक्त किया गया? क्या परमात्मा ने इसी रात्रि को जन्म लिया था? क्या रात्रि ही में पवित्र रहने अथवा अपने कल्याण की बात सोचने की ओर ध्यान खिंचवाया था? इस विषय में स्मरण रखने की बात यह है कि यहाँ रात्रि शब्द २४ घंटे में एक बार आने वाली रात्रि का वाचक नहीं है क्योंकि ८-१० घटे में ही विश्व परिवर्तन का कार्य नहीं हो जाता है। **यहाँ रात्रि अज्ञान अन्धकार का तमोगुण एवं आलस्य स्वरूप विस्मृति का तथा पापाचार का प्रतीक है। यहाँ 'रात्रि' शब्द उस 'महा-रात्रि' का वाचक है जब कि सारी सृष्टि में धर्म भ्रष्टता, कर्म भ्रष्टता और विकार प्रधान हो जाते हैं। ऐसा समय कलियुग का अन्तिम चरण ही होता है।** परमात्मा शिव ऐसे ही समय पर अवतरित होकर कल्याण की ओर सभी का ध्यान खींचवाते हैं तथा विश्व का कल्याण-कारी कर्त्तव्य करते हैं। इस कारण इसको 'शिव-रात्रि' कहा जाता है। इसके साथ एक और मुख्य बात मनुष्य नहीं जानते हैं कि हम आज कौन-सी शिव-रात्रि मना रहे है क्योंकि जिसकी भी जयन्ती मनाते हैं उसकी संख्या सभी को मालूम रहती है। परन्तु अब कौन-सी शिवरात्रि है वह नहीं जानते हैं। क्यों? क्योंकि मन्दिरों में शिवलिंग नाम से 'शिव' की जो प्रतिमायें स्थापित हैं, उनसे स्पष्ट है कि शिव तो 'अशरीरी' हैं। अतः प्रश्न उठता है कि उनका जन्म किस तन में और कैसे होता है?

'शिवरात्रि' का रहस्य

यह तो सभी जानते हैं कि परमपिता परमात्मा शिव जन्म मरण से न्यारे हैं और कर्मातीत हैं। अतः

वह कोई कर्म जन्य शरीर लेकर किसी के पास शिशु रूप में तो पालना ले नहीं सकते, वे तो सभी के माता-पिता एवं पालनहार हैं। इसलिए वे कलियुग के अन्तिम चरण में साधारण मनुष्य के तन में दिव्य प्रवेश करते हैं जिसे 'परकाया प्रवेश भी कहा जाता है। उसके मुखाविन्द द्वारा वे ईश्वरीय ज्ञान और योग की शिक्षा देकर जन-मन को सतोप्रधान बनाकर 'सतयुग' की पुनः स्थापना करते अर्थात् विश्व का कल्याणकारी परिवर्तन करते हैं। उसी मानव को वे 'प्रजापिता ब्रह्मा' नाम देते हैं जो कि गुणवाचक और कर्त्तव्यवाचक है। उसी द्वारा उन्होंने ५००० वर्ष पहले भारत में ज्ञान गंगा बहा कर भारत को पावन किया था। इसके साथ यह बात जानना भी जरूरी है कि मनुष्यात्मायें तो शरीर धारण करने के पश्चात् संसार में जीवन व्यतीत करतीं, कार्य करतीं और अन्त में एक शरीर छोड़ दूसरा लेतीं। लेकिन परमपिता परमात्मा 'शिव' तो सदा मुक्त हैं। इसलिए उनके पुनर्जन्म का प्रश्न ही नहीं उठता है। वे तो जब अवतरित होकर परकाया प्रवेश करते हैं तब भी सारा दिन सारा समय उनका उस तन में रहना अनिवार्य नहीं है क्योंकि उनका प्रजापिता ब्रह्मा के शरीर से कोई बंधन नहीं है। उनके मुक्त होने का यह भी अर्थ नहीं है कि वह फिर इस लोक में नहीं आते हैं। बल्कि उनका तो कर्त्तव्य ही यह है कि हर कलियुग के अन्त में जब पुनः अज्ञान अन्धकार रूपी रात्रि होती है तब वे पुनः अवतरित होकर ज्ञान योग तथा पवित्रता के आधार पर विश्व का कल्याण करते हैं। अतः उनका नाम 'शिव' तो शाश्वत है। उनका यह कर्त्तव्य भी हर कल्प पुनरावृत्त होने वाला है। इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहस्य को जानने के उपरान्त आप इस निष्कर्ष पर सहज ही पहुँच सकेंगे कि वर्तमान समय वही अज्ञान अन्धकार का चल रहा है जैसाकि शास्त्रों, पुराणों में भी वर्णन आता है जैसे कि कलियुग अन्त के लक्षण सदाचारहीन व्यापार, विवेक शून्य विज्ञान, प्रेमहीन प्रभुत्ता अन्धश्रद्धा युक्त भक्ति, धर्म के नाम पर हिंसा, बाप रोटी के लिए बेटी का व्यापार कर रहा है। काम वासना में अन्धे लोगों को कोई सम्बन्ध की मर्यादा नज़र नहीं आ रही है। उधर भौतिक प्रगति के द्वारा इतने अस्त्र-शस्त्र तैयार हो गये हैं जैसे हाइड्रोजन बम, एटम बम आदि, कि न जाने कौन-सी ऐसी घड़ी आयेगी जो विश्व को भस्मी भूत कर देगी। बस ! आज तो यही हर मानव मन की आवाज है कि 'मानवता कहाँ खो गई, धर्म कहाँ सो गया' परन्तु निराशा के ऐसे तमोगुणी वातावरण में एक आशा की किरण उदय हो चुकी है। क्या आप जानते हैं ? यह तो निर्विवाद सत्य है कि अति अन्त को लाती है परन्तु सृष्टि आदि होने के कारण अन्त के बाद पुनः आदि जरूर होती है। तो आज आप सभी को यह जानकर अति हर्ष होगा कि आप सर्व आत्माओं को इस दुःखमय नर्क-पूर्ण संसार से निकाल कर पावन सुखमय स्वर्ग में ले जाने के लिए परमपिता परमात्मा 'शिव' अपने उस अनादि एवं अविनाशी करुणामय गुण के अनुरूप तथा अपने कहे उस ईश्वरीय वचन के अनुसार १९३७ ई० से कलियुग के वर्तमान धर्मग्लानि के समय भी अपना ईश्वरीय कर्त्तव्य कर रहे हैं। इसलिए आज हम उनकी '४४वीं हीरे-तुल्य शिवरात्रि' मना रहे हैं। वे अब पुनः प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान, योग, दिव्यगुण, पवित्रता, शान्ति, आनन्द, शक्तिरूप अनमोल वरदान दे रहे हैं जो इस अज्ञान अन्धकार की रात्रि में आध्यात्मिक अर्थ में जागेगा वही इन वरदानों को पायेगा। जो अब ब्रह्मचर्य रूपी व्रत को पालन करेगा वही उन द्वारा मुक्ति और जीवनमुक्ति रूपी कल्याण का भागी बनेगा। अतः सर्व आत्माओं के कल्याणकारी शिव परमपिता परमात्मा की इस ४४वीं शिवरात्री पर यही शुभ संदेश है कि 'पवित्र बनो—राजयोगी बनो'।

—:०:—

यह चित्र वरंगल सेवा केन्द्र के वार्षिक उत्सव के अवसर का है Y ग्रोवाचारी जी भाषण कर रहे हैं।

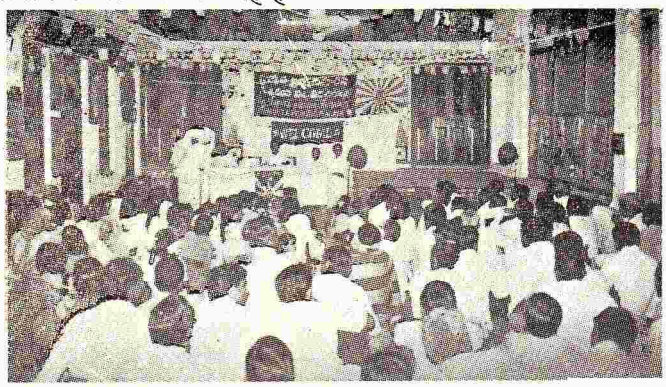

पूना कृषक मेले में लोकसभा के सभापति भ्राता बलराम जी पधारे थे ब्र० कु० सुन्दरी उन्हें ईश्वरीय सौगात दे रही हैं।

सिकन्दराबाद के आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन आंध्र के मुख्य मंत्री अंजैया जी दीपक जलाकर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० बहनें खड़ी हैं।

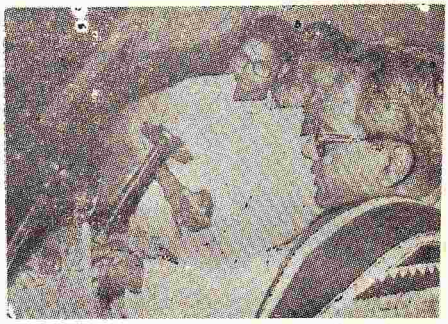

सोलापुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। जिसका उद्घाटन महाराष्ट्र के अन्न व नागरी मंत्री कमले जी कर रहे हैं।

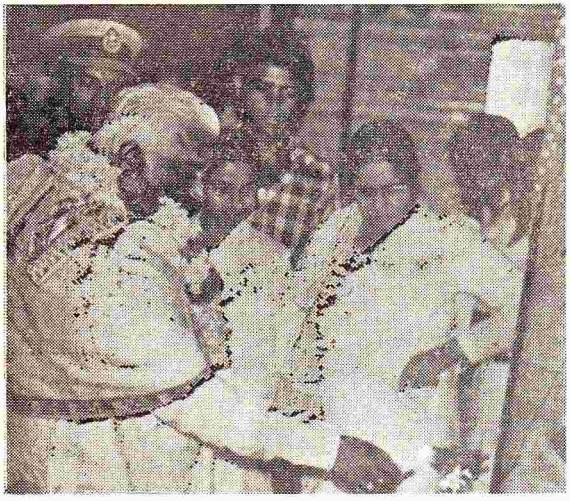

भावनगर द्वारा आयोजित एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन स्वामी महाराज जी कर रहे हैं। साथ में ब० कु० बहनें व भाई खड़ी हैं।

निमच शिक्षक वर्ग राजयोग शिविर का उद्घाटन पा० प्रशासन निर्मलकुमार जी कर रहे हैं।

अम्बाला सेवा केन्द्र की ओर से शिव ध्वजारोहण के अवसर पर विधानसभा के सदस्य सपत्नी पधारे थे ब्र० कु० सरोज उमा साथ में खड़े हैं।

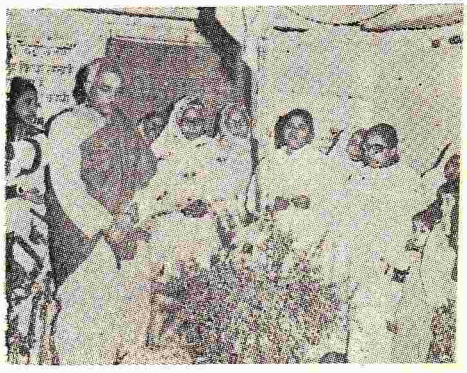

वाराणसी में विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन समारोह में ज्योर्तिमठ बद्रिकाश्रम के स्वामी शंकराचार्य (वरिष्ठ) शांतानन्द सरस्वती जी पधारे थे।

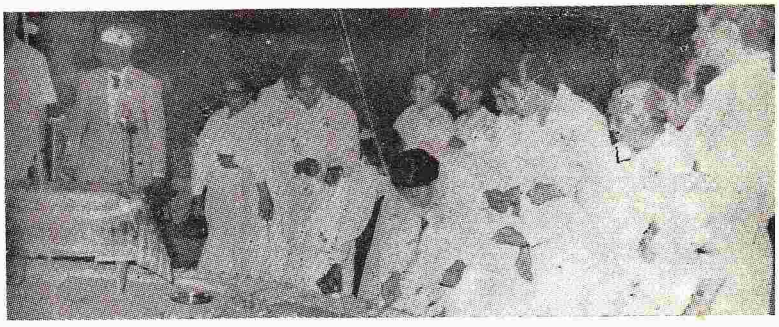

वाराणसी में विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन बह्माकुमारी बहनें दीप जलाकर कर रही हैं।

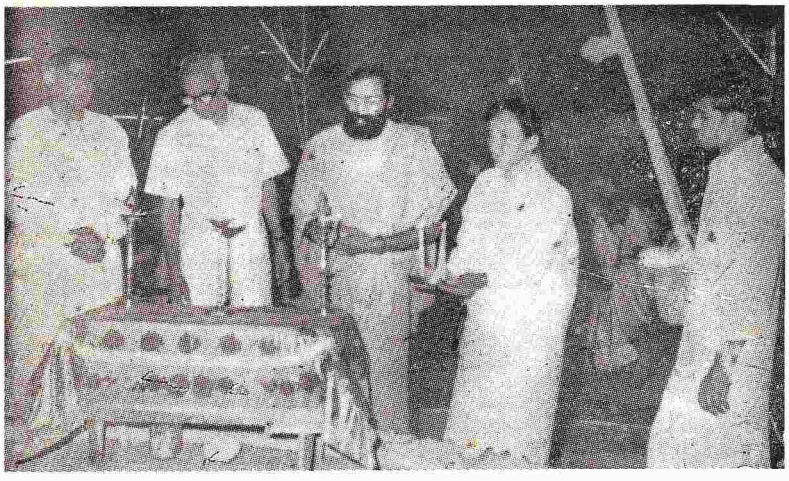

वाराणसी के विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए स्वामी शंकराचार्यजी के शिष्य (मनोनीत) शंकराचार्य स्वामी विष्णु देवानन्दजी दिखाई दे रहे हैं।

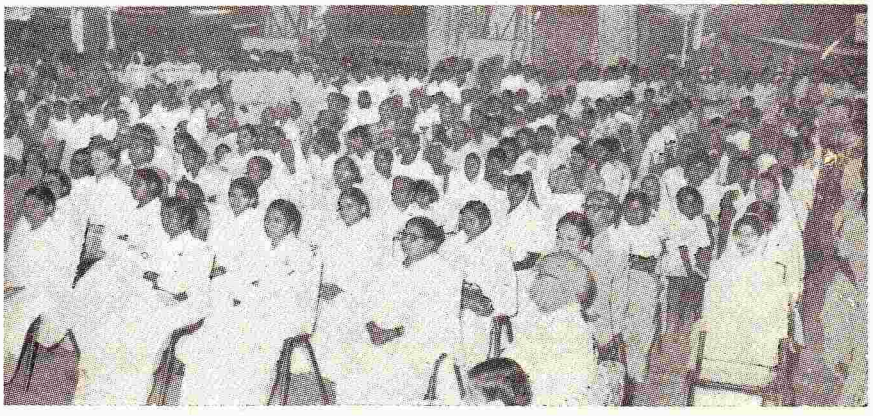

वाराणसी विश्व कल्याण आध्यात्मिक मेले के समाप्ति समारोह के अवसर पर मेले के प्रांगण में श्रोतागण दत्तचित्त होकर ईश्वरीय ज्ञान सुन रहे हैं।

एकांकी

"नया जीवन"

(ले० ब्र० कु० सूरजकुमार, मधुबन, आबू)

पात्र परिचय—

१. **मूलचन्द**—एक आई० ए० एस० अधिकारी
२. **मंजू**—मूलचन्द की धर्म पत्नि, शिक्षित नारी
३. **चार अन्य**—अधिकारी
४. **मदन मोहन**—एक ब्रह्माकुमार

"प्रथम दृश्य"

मूलचन्द के घर का एक कमरा, सुन्दर फ़र्नीचर व फ़िल्मी चित्रों से सजा हुआ है। घर के वातावरण से उसकी सम्पन्नता नज़र आ रही है। मूलचन्द अभी-अभी दफ्तर से लौटा है, मन परेशान है। सायं छः बजे का समय है।

मूलचन्द—(मंजू से) मंजू, बस जल्दी चाय दो, आज मैं बहुत थका हुआ हूँ।

मंजू—हाँ, अभी लाई···

(मंजू चाय लाती है)

मंजू—आज आप बड़े ही उदास नज़र आ रहे हैं, तबियत तो ठीक है ?

मूलचन्द—इस संसार में मेरी तो सुख-शान्ति ही छिन गई है। आज सवेरे से ही ऑफिस की समस्याओं ने परेशान किया हुआ था और ३ बजे ही फिर समाचार मिला कि हमारे बड़े अधिकारी कल निरीक्षण के लिए आ रहे हैं। मेरे मन की उलझन बढ़ गई। आजकल के कर्मचारी ठीक काम ही कहाँ करते हैं।

मंजू—पर इसमें इतने डर की क्या बात है ? अभी चैन से चाय पियो, कल का कल देखा जाएगा।

मूलचन्द—और मैंने कल एक बाबू को काम ठीक न करने से ऑफिस से निकाल दिया। उसकी पत्नि रोती-रोती मेरे पास आई। उसके दर्द भरे शब्द मेरे कानों में अभी तक गूँज रहे हैं। कहती थी—'साहब, मेरे छोटे-छोटे बच्चों का ख़्याल करो, वे भूखे मर जाएँगे'।

मंजू—निकाल क्यों दिया बेचारे को, कुछ और सजा दे देते।

मूलचन्द—मेरा मन दिनों-दिन बहुत ही अशान्त रहने लगा है तुम ही मुझे शान्ति दो। प्राचीन काल में नारियों ने मनुष्य का मार्ग प्रदर्शन किया था। नहीं तो मुझे थोड़ी-सी इंगलिश वाइन (wine) दो, पीकर सो जाऊँ कुछ तो मन शान्त हो।

मंजू—यह आदत अच्छी नहीं। आप एक सभ्य कुल के भाती हो, आपको यह नहीं शोभता। मैं आपको ये नहीं दूँगी। आप घर में आते हो, बच्चे तुम्हारे प्यार की एक पुचकार के लिए तड़पते रहते हैं और आप इतने परेशान। आखिर बच्चों को बाप का प्यार कब···

मूलचन्द—तुम देवी हो मेरे घर में···परन्तु मैं क्या करूँ ? बढ़ती हुई समस्याओं के प्रवाह को रोकने में मैं असमर्थ हूँ। अब कुछ शान्ति की राह ढूँढ़नी पड़ेगी।

मंजू—शान्ति की राह क्या···कहती हूँ कि मंदिर में चलो तो कहते हो मेरा इनमें विश्वास नहीं। कुछ तो रीति-रिवाजों को अपनाना ही पड़ेगा।

घण्टी बजती है। और नौकर दरवाजा खोलता है।

(मुस्कुराते हुए धीमी गति से मदन मोहन का प्रवेश—हाथ में एक बैग है जिस पर श्रीकृष्ण का चित्र है।)

मदन मोहन—ओम शान्ति···

मूलचन्द—आइये बैठिये !

मूलचन्द को उसका बहुत आकर्षण हुआ। उसके चेहरे की दिव्यता व शान्ति, मूलचन्द को भी शान्त कर रही है।)

मूलचन्द—(आश्चर्य से) आप कोई समाज सुधारक हैं या ज्ञानी ?

मदन मोहन—हाँ, दोनों ही कह सकते हैं और साथ में योगी भी।

मूलचन्द—आपका परिचय, महाशय। आपने मेरे घर को पवित्र किया।

मदन मोहन—इस समय मैं ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय की ओर आ रहा हूँ और वैसे मैं सिविल इन्जिनियर हूँ। मुझे मदन मोहन कहते हैं।

मूलचन्द—ब्रह्माकुमारी आश्रम···वहीं जहाँ वे लड़कियाँ रहती हैं।

मदन मोहन—वे लड़कियाँ नहीं बन्धु, इस सृष्टि पर अवतरित देवियाँ हैं जो मनुष्य को प्रभु-मिलन का व शान्ति का रास्ता बताती हैं।

मूलचन्द—तो आपने वहाँ जाकर क्या पाया ?

मदन मोहन—सबसे मुख्य बात, कि जीवन की हर परिस्थिति व समस्याओं में मन को शान्ति भंग न हो। जीवन में आने वाली घटनाओं का भय निकल गया और अवर्णनीय ईश्वरीय आनन्द जीवन में आ गया। मन सदा प्रसन्न व सन्तुष्ट रहता है।

मूलचन्द—यह तो बहुत अच्छी बात है। परन्तु इनका इतना खर्च कैसे चलता है ?

मदन मोहन—हम जैसे प्रभु प्रेमी चलाते हैं।

मूलचन्द—कैसे ?

मदन मोहन—देखो भाई, यहाँ का विद्यार्थी बनने से पूर्व मेरा कम-से-कम ३००/-मासिक शराब, सिगरेट व सिनेमा में जाता था और अब मेरी ये गंदी आदतें छूट गई। मुझे इनकी आवश्यकता ही नहीं रही क्योंकि मन आनन्दित रहता है। मेरे ३००/- मासिक बच गये। मैं १००/- प्रति माह आश्रम में मानव सेवार्थ देता हूँ, तो भी मैं २००/- प्रतिमाह जमा करने लगा हूँ। मेरे जैसी अनेक आत्माएँ वहाँ आती हैं जिन्होंने वहाँ जाकर जीवन का सच्चा सुख पाया है।

मूलचन्द—आपकी ये सब आदतें कैसे छूट गई ?

मदन मोहन—इसी प्रयोजन से मेरा यहाँ आना हुआ। मैं आपको हमारे मुख्यालय आबू में होने वाले त्रिद्विसीय योग-शिविर का निमन्त्रण देने आया हूँ राज योग से ही ये मनोविकार छूटते हैं। लो आप यह फॉर्म भरें।

मूलचन्द—परन्तु मुझे क्या करना होगा ?

मदन मोहन—आपके जीवन की वे सुनहरी घड़ियाँ होंगी। आप वहाँ हमारे साथ चलें और जीवन जीने की अनुपम कला सीखें व समस्याओं से साहस पूर्वक लड़ने का ईश्वरीय बल राजयोग द्वारा प्राप्त करें।

मंजू—ना-ना-भाई, मैं वहाँ नहीं जाने दूँगी। सुना है कि वे तो ऐसा सुरमा डालती हैं कि मनुष्य उनका ही हो जाता है।

मदन मोहन—बहन, ये ईश्वरीय निमन्त्रण किसी भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है। भला अगर ऐसा ही होता तो हम सभी को सुरमा डालकर अपना न बना लेते। कलियुगी मनुष्य श्रेष्ठ चीजों के बारे में ऐसी ही भ्रान्ति फैला देते हैं। सत्य के पथ में ये काँटे होते हैं। परन्तु जो इनसे नहीं डरता, वह सत्य को पा लेता है।

मंजू—आपकी बातें तो बहुत ही अच्छी लगती हैं, परन्तु मुझे डर लगता है।

मदन मोहन—डर क्यों ? ये घर छोड़कर नहीं जावेंगे। आप भी इनके साथ हमारे मेहमान बनकर चलो। देखो, मैं भी तो गृहस्थ में ही रहता हूँ, परन्तु मेरे जीवन के सभी काँटे निकल गये। आप एक बार चलकर तो देखें।

मूलचन्द—बोलो मंजू, तुम जैसा कहो। हर्जा क्या है, चलें देख लें।

मंजू—लो हम दोनों ही चलें। तीन दिन की ही तो बात है।

मदन मोहन—बहन, वहाँ जाकर आप एक नया जीवन प्राप्त करेंगी और देखेंगी कि इस पाप और दुःखों की दुनिया में कहीं सुखमय, शान्त, स्वर्ग भी बसता है जहाँ भगवान की चैन देने वाली ज्ञान बंसी बजती है।

मूलचन्द—अच्छा इंजीनियर साहब, हम चलेंगे। अगले सोमवार से छुट्टियाँ भी हैं, तब ही हम चलेंगे।

मदन मोहन—अवश्य, मुझे हर्ष हुआ आपका उदित हुआ भाग्य देखकर। अच्छा अब मुझे आज्ञा दें।

मूलचन्द—अरे भई, कुछ चाय पानी···

मदन मोहन—क्षमा करें, जीवन बड़ा संयमित है। अब मैं छुट्टी चाहता हूँ। और वहाँ जाने से पूर्व आप एक बार यहाँ हो हमारे आश्रम पर आयें।

मूलचन्द—अवश्य···

(सभी खड़े होते हैं और मदन-मोहन मुस्कुराता हुआ, ओम शान्ति कहकर प्रस्थान करता है।)

"पर्दा गिरता है"

"दूसरा दृश्य"

मूलचन्द का ऑफिस। चार अन्य अधिकारी भी बैठे हैं, गप शप कर रहे हैं। मूलचन्द का प्रवेश। आज चेहरे पर कुछ शान्ति है, चाल मंद है, गम्भीर है।

सभी हाथ मिलाते हैं।

एक अधिकारी—साहब इस बार एक हफ्ते की छुट्टी है, कहीं घूमने का प्रोग्राम बनाना चाहिए।

मूलचन्द—हाँ, मैं तो माउण्ट आबू जा रहा हूँ।

दूसरा अधिकारी—वहाँ इतनी दूर···

मूलचन्द—हाँ, ब्रह्माकुमारियों की ओर से ३ दिन का योग-शिविर हो रहा है, मुझे उसमें आमंत्रित किया है।

तीसरा अधिकारी—अरे साहब, इस उम्र में और ब्रह्माकुमारियों के पास, आपको भी क्या सूझी है। छोड़ो, चलो इस बार ऋषिकेष चलें। योग-ही सीखना है तो वहाँ चलो। किसी अच्छे आश्रम में ठहरें।

चौथा अधिकारी—अरे साहब वो तो क्रिश्चियन हैं। वेदों को नहीं मानतीं। और सुना है कि वो तो भाई-बहन बना देती हैं।

मूलचन्द—ऐं···भाई-बहन, इतना पवित्र नाता। तब तो अवश्य ही उनमें कोई शक्ति है भाई। लगता हैं तुम्हारे नयनों पर भ्रम की पट्टी है। मैं कल यहाँ ही इनके आश्रम पर गया था। कितना शान्त और दिव्य वातावरण था वहाँ। मुझे तो वहाँ सच्ची मानवता की सुगन्ध आई। पता नहीं तुम कैसी बातें करते हो। आप कभी गये हैं वहाँ ?

प्रथम—नहीं गये तो नहीं, सुना है।

मूलचन्द—बिना देखे ही किसी को कलंकित करना बुद्धिमानी नहीं है।

दूसरा—परन्तु साहब, वो तो भारत की संस्कृति को नष्ट कर रही हैं।

मूलचन्द—भारत की संस्कृति को किसने उज्जवल किया है। कौन नहीं नष्ट कर रहा है उसे। क्या आप और हम उस संस्कृति को अपना रहे हैं ? मुझे तो उनकी श्वेत पोशाक को देखकर ऐसा लगा, मानो वो ही भारत में कुछ जान लायेंगी।

तीसरा—खैर, देख आओ साहब, हम तो नहीं···

मलचन्द—मैंने तो वहाँ जाने का निर्णय कर लिया है। अपनी धर्म पत्नि सहित जा रहा हूँ।

चौथा—हाँ, देखने में क्या हर्जा है। पहले आप देख आएँ, फिर हम देखेंगे।

"तीसरा दृश्य"

(ब्रह्माकुमारी आश्रम, माउण्ट आबू का शान्त वातावरण, मूलचन्द मंजू बहन सहित अन्तर्राष्ट्रीय योग केन्द्र के एक कमरे में ठहरे हैं, दोनों आपस में बात करते हैं।)

मूलचन्द—कितनी अनुपम शान्ति है···इतना भव्य स्थान, अवश्य ही यहाँ कोई ईश्वरीय शक्ति है। मुझे तो लग रहा है कि कहाँ आ गया हूँ संसार को इसका ज्ञान ही नहीं। ये दुनिया में ही है या दुनिया से कहीं ऊपर···सब चिन्ताएँ, भ्रम समाप्त हो गये।

मंजू—और सभी के श्वेत वस्त्र, उनकी सादगी व पवित्रता की छटा बिखेर रहे हैं। न जाने क्या रहस्य है इनकी देवताई-सी मुस्कान का। लगता है, कहीं नई दुनिया में तो नहीं आ गये।

मूलचन्द—देखो, तुम मना कर रही थी। अच्छा

हुआ, हमारे भाग्य से हम इस पावन धरती पर आ गये।

मंजू—हाँ, हमारे किन्हीं पुण्य कर्मों का फल हमें मिल गया। सचमुच अगर हम लोगों के कहने से न आते, तो हम इस भाग्य से वंचित रह जाते।

मूलचन्द—और यहाँ का स्नेह देखा तुमने। माँ ने भी इतना स्नेह हमें नहीं दिया। यहाँ की इन्चार्ज कल मिली, देखा न कितना पवित्र और दिव्य जीवन है उनका। उन्हें देख लगा मानो शक्ति स्वयं अवतरित हुई हो।

मंजू—अब तो हम ये राजयोग का अभ्यास कभी नहीं छोड़ेंगे। आज यहाँ हमारा अन्तिम दिन है पर हम इसे आजीवन अपनायेंगे।

मूलचन्द—मैं सोच रहा था कि मनुष्य-जीवन पाकर भी मैं यों ही इतने दिन उलझनों और व्यसनों में फँसा रहा। हम यों ही विकृत समाज की रीति-रिवाजों में उलझे रहे। मुझे स्वयं पर हँसी आ रही है। मैं कितना शिक्षित परन्तु कितना मर्ख था। अब तो न जाने मेरी समस्याएँ कहाँ चली गई। समझ में आ गया, अरे भई, ये दुनिया तो एक खेल है। खेल में हम यों ही अशान्त···

मंजू—और सुनो, दीदी जी ने कहा था कि यहाँ क्या छोड़कर जा रहे हो तुमने कहा था सोचूंगा। फिर क्या···

मूलचन्द—हमारे इन दिनों के जीवन ने हमें बता दिया कि जीवन कैसा हो···शायद तुम भी इससे सहमत होगी ?

मंजू—हाँ, बहुत सारा जीवन तो हमारा भोगों में बीता, अब तो मन कहता है कि इस पवित्रता की धारा में अपनी सब मैल धो दूँ।

मूलचन्द—(भाव-विभोर-सा) सचमुच मंजू बहन···

मंजू—अरे, तुम मुझ बहन कह गये। सभी को बहन कहते-कहते मुझे भी···

(हँसने लगती है)

मूलचन्द—सचमुच, पवित्र वातावरण में भी जीवन पवित्र न बने, यह नहीं हो सकता। बेहद आनंद पाया है यहाँ···मैंने तुम्हें बहन कह ही दिया, तो ठीक है बोलो आपको स्वीकार है ?

मंजू—जिधर आप, उधर ही मैं। मैं तो सोच ही रही थी कि हम पवित्र जीवन व्यतीत करें। इसी में मनुष्य-जीवन का आनन्द है। और आपने बीज डाल ही दिये।

मूलचन्द—तो आज से हम पवित्रता की प्रतिज्ञा कर लें···अगर न निभा पाये तो···

मंजू—मनुष्य क्या नहीं कर सकता। जबकि इतने ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ निभा सकते हैं तो हम क्यों नहीं। मैंने मदन जी से भी पूछा था, वे कह रहे थे कि हम दोनों एक-साथ रहते हैं, परन्तु अपवित्रता की गन्ध भी नहीं आती।

मूलचन्द—हाँ देवी, प्राचीन ऋषि भी कह गये हैं कि महान बलवान वही है जिसके मन को कामदेव छू भी न सके।

मंजू—हाँ, तो राजयोग द्वारा हम पवित्र जीवन बिता सकेंगे। उस दिन बहन जी ने कितना अच्छा भाषण किया। मुझे तो लगा कि हमने सत्पथ पा लिया। जीवन की बेहद प्राप्ति हो गई।

मदन मोहन का प्रवेश—

मदन—आप तैयार हो गये होंगे···बाबा के कमरे में चलना है।

मंजू—मदन जी, आपका लाख-लाख शुक्रिया··· इसके बदले हम आपको क्या दें। मेरे उस दिन के शब्दों को क्षमा कर देना। मूर्ख का काम है अपशब्द कहना और महान व्यक्ति का काम है क्षमा कर देना। मेरा मन मुझे धिक्कार रहा है कि पगली, उस दिन तुम मदन भाई को क्या कह रही थी।

मदन—मंजू बहन, आपके उदित भाग्य को देखकर मुझे असीम हर्ष हो रहा है। कई बार आपसे मिलने का विचार आया था। परन्तु अब ही संयोग बन सका।

मंजू—भैया, इस धरती के स्वर्ग पर हमें आप पहले क्यों नहीं लाये ?

मूलचन्द—चलो, अभी भी आ गये, अच्छा

हुआ। अगर हम लोगों के बहकावे में आकर यहाँ न आते तो सचमुच भाग्य गँवा देते।

मंजू—मदन भाई, यहाँ का भोजन बड़ा सात्विक है।

मदन—आप भी अपने घर ऐसा ही सात्विक आहार करें। आपका घर योगियों का आश्रम बन जाएगा।

अच्छा, अब बाबा के कमरे में चलें। बाबा इसी कमरे में विश्राम करते थे और यहीं बैठकर उन्होंने योग तपस्या भी की थी यहाँ के प्रकम्पन बड़े शक्तिशाली हैं। यहाँ बैठकर सहज ही एकाग्रता हो जाती है। ये ही वो कमरा है जहाँ परमपिता शिव और विश्व की सर्वश्रेष्ठ आत्मा प्रजापिता ब्रह्मा ने निवास किया था। यहाँ आकर कई नास्तिक आस्तिक बन गये। वहाँ जाकर अपने मन की सभी बातें अपरोक्ष रूप से बाबा से कहकर पूरे जीवन के लिए हल्के हो जाओ।

(सभी का बाबा के कमरे की ओर प्रस्थान)

(पर्दा बन्द)

"चौथा दृश्य"

मधुबन के मध्य में बाबा का कमरा, चारों ओर श्वेत चादरों से आच्छादित, ब्रह्मा बाबा का चमकता ट्रान्स लाइट का चित्र, बाबा की चारपाई व गद्दी। लाल प्रकाश जल रहा है। तीनों योग में बैठे हैं।

(गीत बज रहा है।)

एक बाबा मिले मधुबन में
शिव-बाबा मिले उनके तन में
दोनों बाबा मिले एक आँगन में
वो आँगन है मधुबन में···
एक बाबा···

मूलचन्द—आह···शिव बाबा, मैंने आपको पा लिया···पा लिया मैंने तीनों जहान का मालिक···पा लिया वो असीम ख़ज़ाना, जिसकी कल्पना भी न की थी।

बाबा···ये मेरा सारा जीवन पापों में बीता। मेरे पाप क्षमा कर दो, मेरे बाबा···मैं राह भूला इन्सान था, भटक रहा था मृगतृष्णा की तरह इस दुःखों के जहान में···मुझे राह मिल गई बाबा···

मुझ पतित को भी स्वीकार करो···मैं आपकी शरण में हूँ। सुना है आप बड़े दयालु हैं, शीघ्र ही पाप क्षमा कर अपनी गोद में समा लेते हैं···मुझ पर भी कृपा करो बाबा···मुझे भी अपना लो।

(नेपथ्य में आकाश वाणी)

ठीक स्थान पर आ गये वत्स···मेरे मीठे बच्चे तुम मेरे नयनों के नूर हो···अब तुम मेरे हो गये, मैं भी तुम्हारा हो गया···मैं तुम्हारे लिए स्वर्ग लाया हूँ वत्स। बस पवित्र बनो, विकारों को इस रुद्र यज्ञ में स्वाहा कर जाओ···

(मूलचन्द अशरीरी हो गया, उसे लगा बाबा की आँखें हिल रही हैं तथा नयनों से प्रकाश निकल कर उस पर आ रहा है।)

मूलचन्द—स्वप्न या भ्रम तो नहीं है···(आँखें मलता है।)

(पुनः आँखें झपकती हैं और नेपथ्य से आवाज़ आती है)

आओ बच्चे···आओ···

(मूलचन्द के नयनों से अश्रुधार बहने लगी, उसने अश्रु मोतियों की यह माला ही बाबा को समर्पित की और मँजू भी इन्हीं लहरों में खो गई···)

गीत के बोल कानों में पड़े—

बाबा तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है
खुशियों से भरा जीवन हर पल में कमाई है।

(मूलचन्द व मंजू का मन-मयूर नाच उठा। जीवन खुशियों से भर गया। उन्हें लगा कि आज उनके सभी पाप नष्ट हो गये। वो निर्मल हो चुके हैं।)

(पर्दा बन्द)

"पाँचवा दृश्य"

(मूलचन्द का ऑफिस। वहीं चारों ऑफिसर बैठे हैं। मूलचन्द का प्रवेश आज चेहरे पर शान्ति है। हाथ में एक बैग है जिस पर श्रीकृष्ण का चित्र है। सभी अधिकारी उठकर नमस्ते करते हैं और एक अधिकारी घण्टी बजाता है

और चपरासी 'जीवन' प्रवेश करता है।)

जीवन—जी साहब···

अधिकारी—साहब आये हैं, जल्दी चाय···

मूलचन्द—ठहरो बन्धु, मैंने बाज़ार का खाना पीना छोड़ दिया है।

अधिकारी—क्यों? क्या हुआ, आपको साहब?

मूलचन्द—ब्रह्माकुमारी आश्रम में जीवन का सुलभ पथ सीखकर आ रहा हूँ।

दूसरा अधिकारी—तो आप पर भी उनका जादू लग ही गया···। रमणियों का जादू किस पर नहीं लगता।

मूलचन्द—विद्वानों जैसी बातें करो बन्धु···। ये सब मूर्खता त्याज्य है। वे तो ज्ञान-योग की साक्षात् मूर्तियाँ हैं। अगर जीवन में कुछ सीखना चाहते हो तो आप भी वहीं जाओ। ऐसी महान आत्माओं के लिए भ्रान्ति फैलाना महापाप है।

अधिकारी—रुष्ट न हो साहब। आप अपना अनुभव बताइये।

मूलचन्द—पवित्रता का सूर्य उदय हुआ है, माउण्ट आबू में ब्रह्माकुमारियों के द्वारा, जिसकी किरणें समस्त विश्व के विकारों के कीटाणुओं को भस्म करती जा रही हैं। वे अपने ब्रह्मचर्य, ज्ञान व राजयोग के बल से अवश्य ही विश्व को स्वर्ग बनायेंगी। स्वर्ग का नमूना अभी भी बनाया है उन्होंने। उनकी पावन दृष्टि ने मेरा चित्त शीतल कर दिया है। उन पर किसी की भी कुदृष्टि नहीं हो सकती, वो चेतन देवियाँ हैं।

तीसरा अधिकारी—हो सकता है। परन्तु वो वेदों, शास्त्रों को नहीं मानतीं।

मूलचन्द—विकार और अहंकार वश होकर वेद उपदेश करने से क्या लाभ। क्या वेदों का उपदेश हमारे नैतिक पतन को रोक सका? आप तो वेदों का उपदेश सुनते हैं, कहाँ है आपमें पवित्रता और श्रेष्ठता···

सिद्धान्त वही सत्य हैं जो मनुष्य को पावन करे, जग का उत्थान करे। मैंने उनकी सभी बातों को तर्क पर कस कर देखा और मैंने वहाँ पाया—कल्पना का अभाव, आडम्बर का अभाव, व्यक्ति पूजा का अभाव और अन्तिम सत्य। मुझे अनुभव हुआ कि ये अद्भुत रहस्य सिवाय परमात्मा के कोई नहीं खोल सकता।

अधिकारी—परन्तु दादा लेखराज तो एक जवाहरी था, उसने अपने प्रसिद्धि के लिए ही ये सब-कुछ किया।

मूलचन्द—बन्धु, न तो आपने ब्रह्माकुमारी आश्रम को नज़दीकी से देखा और न उस महान पुरुष को।

दादा लेखराज एक साधारण मनुष्य नहीं, वरन् एक असाधारण व्यक्ति थे जिन्होंने अनेक नारियों का जीवन उत्थान किया, मनुष्य को कीचड़ से निकाला। उन्होंने सैकड़ों नारियों को एक संगठन में और पवित्रता के सूत्र में बाँधा। क्या उसे प्रजापिता ब्रह्मा कहना अयथार्थ है। कितने प्रशासक हैं आज जो अपने घर में दो-तीन नारियों को भी संगठित रखने में समर्थ हैं? मैं तो उस महान पुरुष के व्यक्तित्व पर समर्पित हो गया।

चौथा अधिकारी—परन्तु क्या उनके सिद्धान्तों से भारत की प्राचीन संस्कृति अस्त-व्यस्त नहीं हो रही है?

मूलचन्द—मैंने तो जाकर देखा कि वही ऐसी मात्र शक्तियाँ हैं जो पुनः प्राचीन संस्कृति को जाग्रत कर रही हैं। राजयोग व पवित्रता के द्वारा ही भारत को पुनः उसकी पूर्ववत् स्थिति पर लाया जा सकता है। आप वहाँ जाएँ और फिर कुछ कहें···

अधिकारी—तो ज़रूर वहाँ जाकर हम नज़दीक से देखेंगे कि ये ब्रह्माकुमारियाँ क्या कर रही हैं।

मूलचन्द—मैंने तो भई, वहाँ जाकर नया जीवन पा लिया। मेरे दुःख-अशान्ति के दिन अतीत के अंधकार में लुप्त हो गये। और आपको मित्रवत् प्रार्थना करता हूँ कि अवश्य ही वहाँ जाकर सच्ची सुख-शान्ति का प्रसाद ग्रहण करें।

(पटाक्षेप)

y

ब्र० कु० वृज प्रवचन कर रही हैं। साथ में ब्र० कु० स्वदर्शन, ब्र० कु० लेखरामजी और कालेज के प्रिन्सिपलबैठे हैं।

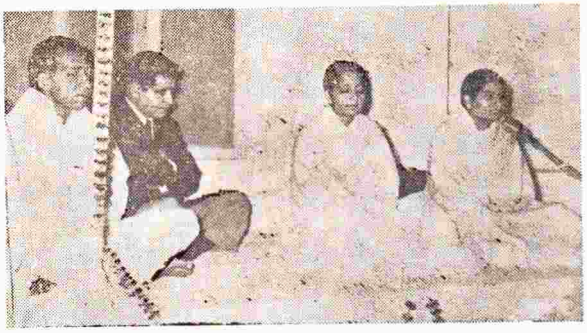

बरनाला में एक मानव कल्याण सम्मेलन रखा गया जिसमें ब्रह्माकुमार अमीरचंद ब्र०कु० लक्षमन व ब्र०कु० बहनें दिखाई दे रही हैं।

नासिक मेडिकल हाल में एक प्रदर्शनी लगाई गयी। स्टेज पर डा० गोगटे के साथ ब्र० कु० गीता तथा अन्य भाई बैठे हैं।

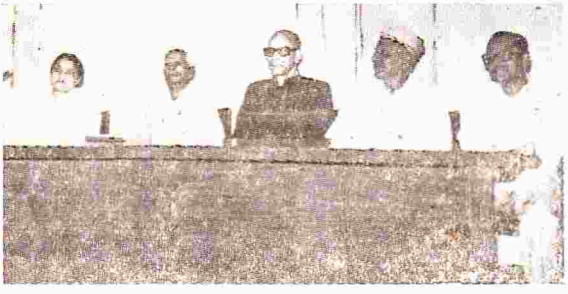

आगरा में वकील भाई के घर पर अलौकिक कार्यक्रम में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ व. कु. बहनें बैठी हैं।

Y

आध्यात्मिक रहस्यपूर्ण चित्र फूलों से सजाया गया।

उदयपुर में अव्यक्त दिवस मनाया गया। मंTM मेवाड मण्डलेश्वर भ्राता मुरली मनोहर J कु० शील बैठी हैं।

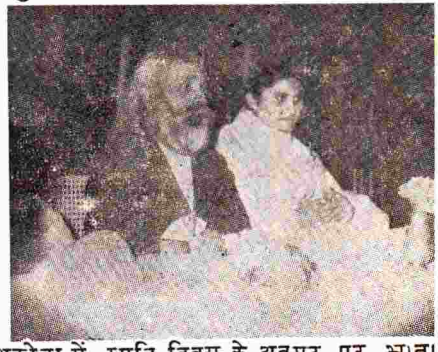

o अकोला में स्मृति दिवस के अवसर पर भ्राता साहव खोटर जो प्रवचन कर रहे हैं।

k

की ओर से शिवध्वजारोहण करतीं हुई ब्र० कु० सन्तरी जी दिखाई दे रही हैं तथा साथ में तथा ब्र० कु० बिन्दु ब्र० कु० रमेश जी अन्य भाई बहनें दिखाई दे रहे हैं।

वरंगल सेवा केन्द्र की ओर से एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया मुख्य अतिथि सामेलजी प्रवचन कर रहे हैं।

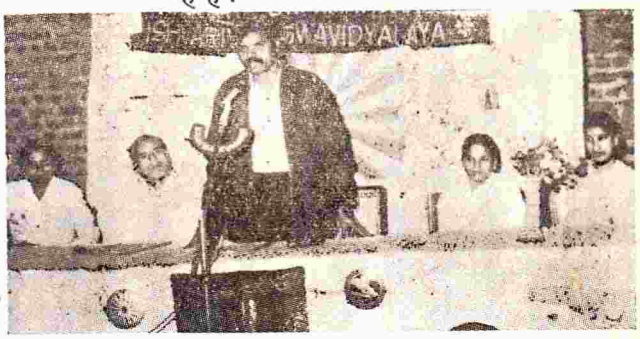

बारीपदा मे अव्यक्त दिवस के अवसर पर मच पर विद्युत विभाग अधिकारीगण तथा एस0 डी० ओ० दिखाई दे रहे हैं।

हिंगणघाट में एक आ० प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। फंकशन में ब्र०कु० नन्दा परिचय दे रही हैं। साल महाराष्ट्र राज्य के सहकार राज्यमन्त्री तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति बैठे हैं।

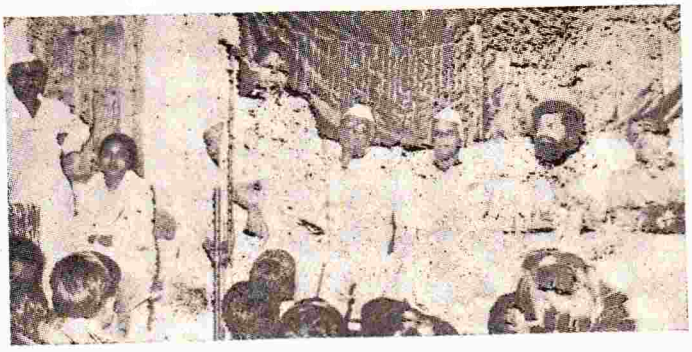

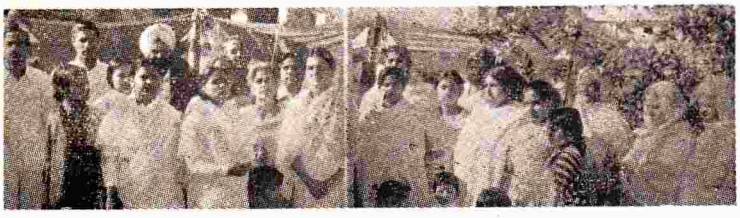

नवाशहर में शिवरात्री के अवसर पर ब्र०कु० राजध्वज लहराते हुए दिखाई दे रही हैं।

रायपुर में एक आ० सम्मेलन का आयोजन किया गया। पधारे हुए मंच पर राधेश्याम अग्रवाल, विधायक सरूपचन्द जैन भ्राता घनश्याम दास अग्रवाल और ब्र०कु० बहनें दिखाई दे रहे हैं।

भेंट वार्ता

ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, मधुबन, माउन्ट आबू

प्रेम व आनन्द दोनों एक ही मार्ग के राही हैं। एक दिन पुरुषार्थ पर दोनों का वार्तालाप होता है···

प्रेम—आनन्द भाई, पुरुषोत्तम संगम युग चढ़ती कला का युग है परन्तु चढ़ती कला का अनुभव बहुत ही कम होता है। इसका कारण समझ में नहीं आता।

आनन्द—हमें तो जीवन में आनन्द ही आनन्द है। मेरा तो नाम ही सार्थक हो गया। मुझे तो बड़ा आश्चर्य होता है जब मैं कभी किसी से यह सुनता हूँ कि जीवन में खुशी या सन्तुष्टता नहीं है।

प्रेम—ऐसी ही बात मेरे साथ है, मुझे खुशी तो रहती है परन्तु उतनी सन्तुष्टता तो नहीं हो पाती···

आनन्द—इन सब बातों का कारण बिल्कुल स्पष्ट है—

पुरुषार्थी का लक्ष्य होना चाहिए—याद और सेवा। परन्तु इस लक्ष्य को छोड़कर इधर-उधर की बातों में सारा दिन लगे रहते हैं, इसलिए व्यर्थ का विस्तार इतना हो जाता है कि कदम नीचे की ओर चलने लगते हैं और जीवन में परेशानी घर कर लेती है।

बोला, आपके साथ ऐसा हो है ना? जब से आप यहाँ आये हो सेवा तो बहुत की है, परन्तु अन्य बातों में चले जाने से लक्ष्य को नहीं पा सके।

प्रेम—ठीक कहते हो आप, आनन्द भैया। आये किसलिए थे और करने क्या लगे अब यह महसूस हो रहा है। आये तो थे यह सोचकर कि बस बाबा की याद का आनन्द लेंगे, अतीन्द्रिय सुख में रहेंगे, परन्तु सब धरा रह गया।

आनन्द—चलो, अब से पुनः तीव्र पुरुषार्थ करो।

प्रेम—चाहता तो बहुत हूँ परन्तु कर नहीं पाता।

आनन्द—यह बात मानी नहीं जा सकती। अन्तर्मुखी होकर ज़रा फिर से सोचो कि क्या सचमुच आप चाहते हो? आपको चाहना में दृढ़ता है?

प्रेम—(अन्तर्मुखी होते हुए) सचमुच, चाहना ऊपर ऊपर को है। अगर अन्दर की चाहना होती तो क्यों न कर पाते। मनुष्य जो चाहे कर तो सकता है लेकिन उसकी चाहना बलवती होनी चाहिए।

आनन्द—अच्छा, आज से रोज़ अमृत वेले उठा करो। बाबा ने अमृत वेले को वरदान दिया है।

प्रेम—वो तो मैं रोज़ उठता हूँ। कभी भी मिस नहीं करता, परन्तु उतना मज़ा नहीं आता। बल्कि थोड़ा-सा आनन्द क्लास के बाद योग करने में ज़रूर आता है।

आनन्द—जानते हो, इसका कारण क्या है?

प्रेम—मैंने कभी सोचा ही नहीं।

आनन्द—योग को रसीला बनाने वाला है ज्ञान। ज्ञान से आत्मा जब भरपूर होती है, तब ही उसे योग में बहुत आनन्द आता है। क्लास सुनने से मन ज्ञान अमृत से रिफ्रेश हो जाता है, इसलिए योग में बहुत आनन्द आता है।

परन्तु रात को हम यों ही सो जाते हैं। सवेरे उठकर बुद्धि को हठ से एकाग्र करने की कोशिश करते हैं, तो बुद्धि भटकने लगती है और इस खींचतान में हो अमर बनाने वाला अमृत वेला बीत जाता है।

प्रेम—हाँ, होता तो यही है···परन्तु करें क्या?

आनन्द—उठते ही एक मिनट बाबा से दो बातें कर लो या स्वयं को किसी नशे में ले जाओ या ज्ञान मनन द्वारा स्वयं को भरपूर कर लो, इसके बाद योग में बहुत ही आनन्द आयेगा।

प्रेम—परन्तु भाई, अपने से तो ज्ञान मनन होता

नहीं।

आनन्द—इसका सहज तरीका है—प्रतिदिन की मुरली से कोई एक अलौकिक नशा चढ़ाने वाली बात याद रक्खो और सवेरे उसी का स्मरण करो।

प्रेम—यह तो हो सकता है।

आनन्द—एक बात और ध्यान में रक्खो। कभी भी उठते ही बिस्तर पर बैठकर योग करने की न सोचो, नहीं तो निद्रा देवी अपनी गोद में ले लेगी।

प्रेम—हाँ, बस यही तो होता है। सेन्टर तो सवेरे ५ बजे जा नहीं सकते।

आनन्द—आँख खुलते ही बिस्तर छोड़ दो और हाथ मुँह धोकर, घूम फिर कर फिर चाहे बैठो या घूमकर याद करो। इससे सुस्ती का प्रभाव योग आनन्द में विघ्न नहीं डालेगा।

प्रेम—अब से मैं ऐसा ही अभ्यास करूँगा।

आनन्द—और कोई कठिनाई तो नहीं आती ?

प्रेम—हाँ, एक विघ्न बहुत बड़ा है···ज्ञानियों का अनुमान व शक बहुत तंग करता है। अनुमान लगाकर हमारी रिपोर्ट करते हैं। हम बस इसी उधेड़ बुन में लगे रहते हैं। इसलिए मैं तो सोचता हूँ कि अलग रहते थे तो ही अच्छा था।

आनन्द—देखो प्रेम, अनुमान लगाने वालों के लिए तो हम कुछ नहीं कर सकते। बाकी अगर आप कहो कि हम ऐसी परिस्थिति में क्या करें तो मैं बताऊँ ?

प्रेम—हाँ, स्वयं को ही बदल सकते हैं। दूसरों को क्या कहेंगे ?

आनन्द—तो इसके लिए सबसे पहली बात अपने विचारों को महान् करो, बेहद की सोचो। छोटे विचार ही विघ्न के कारण हैं।

प्रेम—परन्तु अनुमान वश हमारे बारे में गलत वातावरण ऐसा बना देते हैं कि जीना ही मुश्किल हो जाता है फिर सब उस ही नज़र से देखने लगते हैं।

आनन्द—देखो, व्यर्थ चीज़ बहुत कमज़ोर होती है। अगर हमारे बारे में ऐसा वातावरण बन भी गया, तो भी हम अपने शक्तिशाली संकल्पों से उस वातावरण को समाप्त कर सकते हैं। ध्यान यह रखना चाहिए कि हम उस वातावरण के वश होकर हीन न बन जायें नहीं तो दूसरे हमें वैसा ही समझेंगे। परन्तु अगर वातावरण असत्य है तो हमें बहुत ही निर्भय व अडोल रहना चाहिए तो असत्यता स्वतः ही प्रकट हो जाएगी—

प्रेम—परन्तु गलत रिपोर्ट का प्रभाव तो उल्टा ही होता है। लोग तो उससे प्रभावित हो ही जाते हैं।

आनन्द यह बात मैं मानता हूँ। परन्तु प्रेम··· सत्य सत्य ही है, सत्य को सिद्ध न करो। तुम चुप हो जाओ, अपनी स्थिति न बिगाड़ो। सत्य कभी छुप नहीं सकता। हाँ, हो सकता है सत्य के प्रकट होने में आपको कुछ इन्तज़ार करना पड़े। धैर्यता से इन्तज़ार करो। एक दिन आयेगा जब सत्य चमकेगा व विघ्नों के बादल हट जायेंगे। हो सकता है कि सत्य को निखारने के लिए आपको गलना पड़े जैसे मिश्रित धातु से सोना निकालने के लिए उसे गलाना पड़ता है। परन्तु, गलते समय अपने उज्ज्वल भविष्य को भूलो नहीं।

प्रेम— परन्तु क्या अनुमान लगाने वाले अपना यह धन्धा नहीं छोड़ेंगे ?

आनन्द—ऐसी आशा नहीं की जा सकती। ये भिन्न-भिन्न आत्माओं का गुलशन है, इसमें सभी तरह के फूल हैं। इसलिए दूसरे चाहे कुछ भी करें। तुम अपने लक्ष्य की ओर इतनी तेज़ी से बढ़ो जो रिपार्ट व अनुमान करने वाले लज्जित होकर आपको आगे बढ़ा देखते ही रह जायेंगे।

प्रेम—धन्यवाद आनन्द जी, आपने मुझे धैर्य दिया व उमंग दी। ऐसी ही उमंग की व ऊंचे विचारों की आज अनेकों को आवश्यकता है। अब मैं समझ गया कि अनुमान लगाना कमज़ोर आत्माओं का काम है। दूसरों की कमज़ोरी से स्वयं को कमज़ोर कर देना समझदारी नहीं।

आनन्द—परन्तु एक बात और है हम भी ये अनुमान लगा लेते हैं कि दूसरे हमारा अनुमान लगाते हैं, इसलिए पहले तो खुद से इस बीमारी को निकालना है।

प्रेम—हाँ, यह भी गुह्य बात है।

आनन्द—अच्छा, फिर मिलेंगे।

मीठी वाणी बोलिये, सब को सुख दीजिये

(ले० ब्र० कु० सुषमा, कोलाबा, बम्बई)

दिव्य गुणों के अनगिनत पुष्पों में नम्रता, मीठी और हितकारी वाणी विशेष महत्त्व रखती है। मधुर एवं हितकारी वाणी सम्पर्क में आने वाले को आनन्द, प्रेम, शान्ति प्रतिभासित करती है और उसका स्वयं का जीवन भी आनन्दित हो जाता है। मन ईश्वरीय प्रेमा रस में डूबा रहता है। बुद्धि सात्विक तथा निर्मल बन जाती है, संस्कार उसे श्रेष्ठ कर्मों की ओर प्रेरित करते तथा उसी ही को करने के लिये लालायित रहते हैं। फलस्वरूप सुख के सागर के हम बच्चे अपने स्वधर्म, स्वकर्म और स्वलक्ष्य में खरे उतरते हैं।

कई लोग कहते हैं—"अजी ! आज तो कलियुग के ज़माने में अगर मीठा बोलो तो लोग और ही सिर पर चढ़ते हैं।" हम यह नहीं कहते कि जो मीठा बोले उससे कड़वा बोलो, लेकिन जो कड़वा बोलेगा उसके साथ तो 'शठे शाठ्यम् समाचरेत' ही करना पड़ेगा। अब यह विचारने की बात है कि जो बात लोग कहते हैं उससे वे स्वयं कितने दूर हो जाते हैं। मीठे व्यक्ति के साथ यदि आप मीठा बोलना चाहते हैं, इससे ही सिद्ध है कि यदि आप भी मीठे बोल बोलना शुरू करेंगे तो आपके सम्पर्क में आने वाले मधुर वाणी से, मधुर मुस्कान से आपका स्वागत करेंगे।

दूसरी बात, कड़वा बोलने वाले अथवा कटु स्वभाव वाले के साथ भी 'शठे शाठ्यम' को चरितार्थ करने की बजाय यदि उसके साथ भो आप मधुर संभाषण से पेश आयें तो आज नहीं तो कल वह अवश्य बदल जाएगा। दूसरे को कटु वचन, गंदे वचन, अथवा कुवचन कहने से पहले हमारा स्वयं का मन ही अपवित्र बन जाता है, मलीन हो जाता है क्योंकि मन, वाणी और कर्म में अन्योनाश्रय सम्बन्ध है। जो हमारे संकल्प होते हैं वही हमारी वाणी तथा कर्म के रूप में प्रकट होते हैं। एक बार किसी विद्वान ने किसी प्रभु प्रेमी को कहा—"मुझे क्रोध बिल्कुल ही नहीं आता यदि आपको विश्वास न हो तो आप मुझे सौ गाली भी देकर देखिये मेरे स्वभाव में, चेहरे में कुछ भी फर्क नहीं आयेगा !" उस प्रभु प्रेमी ने हृदय का सारा प्यार नैनों में उड़ेलते हुए और मुस्कुराते हुए कहा—"भाई ! आपमें क्रोध है या नहीं, इसकी परीक्षा तो पीछे होगी, किन्तु पहले तो मेरा मन और मेरा मुख ही गन्दा हो जायेगा, दूषित हो जायेगा !" वस्तुतः यह एक कटु सत्य है कि जिसका मन गन्दा उसकी जुबान भी गन्दी होती है।

शब्दों को श्रवण करने एवं समझने के पश्चात् प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप ही हम प्रत्युत्तर में अच्छा-बुरा व्यवहार कर बैठते हैं। मान लोजिये आप किसी ऐसे प्रदेश में गये हैं जहाँ आप उनकी भाषा से अनभिज्ञ हैं। यदि वे लोग आपको कटु शब्द कहें, गाली भी दें तो आप उत्तेजित नहीं होंगे वरन् मुस्कुराते रहेंगे और प्रेम से उनकी ओर देखते रहेंगे और उनके मन के भावों को पढ़ने की चेष्टा करेंगे।

परमात्मा शिव पिता ने हमें प्रेम का पाठ पढ़ाया है, स्नेह में जीना और जिलाना सिखाया है। मन्मना भव का महान् मंत्र दिया है जिस मंत्र के अर्थ स्वरूप में टिकते ही हम दुःखों व दुःखधाम को भूल अतीन्द्रिय सुख में रमण करने लगते हैं। हमें दुनिया की खबर नहीं होती किन्तु दुनिया हमारी खबर अवश्य लेती है। इसी तरह यदि हमें कोई कटु वचन कहे भी तो सुनते हुए उसे अनसुना कर देना चाहिये, मधुर वाणी से उसे सुख देना चाहिये। यदि किसी के

(शेष पृष्ठ २४ पर)

आत्म-अन्वेषण

ले० ब्र० कु० उमा, बिलासपुर (हि० प्र०)

आत्मा का अस्तित्व स्वीकार किये जाने के पश्चात् उसकी अनुभूति होना भी अति आवश्यक है। आत्म विश्वास, आत्म संयम अथवा स्वअनुशासित जीवन का विकास तभी सम्भव है यदि 'आत्मा' का सत्य ज्ञान और उसकी अनुभूति हमें हो। आत्म शक्ति, दृढ़ संकल्प में वृद्धि तथा कमजोर मनोवृत्तियों से छुटकारा केवल आत्म-निश्चय से ही होता है। पतित और पावन का अन्तर केवल आत्म स्मृति और विस्मृति का ही नाम है। आत्म स्मृति से पावन और विस्मृति से पतित बनते हैं।

मैं कौन हूँ ?

'मैं कौन हूं' यदि इस पहेली को कोई समझ सके तो उसे समझ लेना चाहिए कि उसके हाथ विश्व के पूरे खजाने की चाबी लग गई—यह ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर जानने वाले विश्व के मालिक बनते हैं और इसका उत्तर न जानने वाले भिखारी बन जाते हैं। उत्तर से अभिप्राय केवल प्रश्न के उत्तर देने से ही नहीं अपितु उस उत्तर के वास्तविक अर्थ स्वरूप में स्थित होने से है। आत्म अनुभूति आत्म चिन्तन के बिना सम्भव नहीं। आत्म चिन्तन के लिए आत्मा का पूर्ण ज्ञान होना अनिवार्य है जिसके अर्न्तगत आत्मा का स्वरूप, स्वधर्म, स्वधाम, स्वलक्ष्य, स्वमान तथा इससे सम्बन्धित आत्मा का शरीर से सम्बन्ध, आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध, आत्मा का अन्य आत्माओं से सम्बन्ध, आत्मा का मन से तथा बुद्धि से सम्बन्ध, सृष्टि पर आत्माओं का अभिनय क्रम, आत्मा की विशेषतायें यथा संकल्प, भावनायें, संवेग, संवेदना, करुणा, निश्चय, स्मृति, विस्मृति, धारणा, ध्यान, अनुभव, विचार, कामना, कल्पना तथा संस्कार इत्यादि सभी बातों का ज्ञान होना परम आवश्यक है। आत्मा के इस ज्ञान को स्मृति में धारण करके सोचना, बोलना, देखना तथा करना आत्म स्थिति में स्थित होना है फिर 'मैं आत्मा हूँ' का संकल्प 'मैं हूँ ही आत्मा' इस निश्चयात्मक स्थिति में परिवर्तित हो जाता है।

यद्यपि आत्मस्थिति में स्थित होने के लिए आत्मा का ज्ञान अनिवार्य है तथापि इतना ही सब कुछ नहीं। ज्ञान के पश्चात् ज्ञान को स्वरूप में लाना अत्यन्त आवश्यक है। 'मैं आत्मा ज्योति बिन्दु स्वरूप हूँ' यह आत्मा के स्वरूप का आवश्यक ज्ञान है। अब इस ज्ञान के अर्थस्वरूप में टिकना इससे भी अधिक आवश्यक है क्योंकि बिना इस ज्ञान में स्थित हुए ज्योति बिन्दु रूप की अनुभूति नहीं हो सकती और अनुभूति के बिना निश्चय का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं हो सकता। जब यह निश्चयात्मक स्वरूप स्थिति निरन्तर कार्य व्यवहार में रहते-रहते परिपक्व हो जाती है, फिर देहाभिमान की अविद्या होने लगती है। यह तभी सम्भव है जब हम आत्मा के सम्पूर्ण ज्ञान को स्वरूप में लाने का निरन्तर अभ्यास करें अन्यथा तो आत्मा के ऊपर लम्बा-चौड़ा व्याख्यान करने के पश्चात् भी स्वरूप स्थित नहीं हो सकते। जब तक स्वरूप स्थित नहीं होते, तब तक देहाभिमान के मिटने का कोई कारण ही नहीं बनता। यही कारण है कि कुछ संस्कार जो मूलतः देहाभिमान पर ही आधारित हैं, सहज नहीं मिटते अथवा मिटाने में पुरुषार्थ अथवा संघर्ष ही चलता रहता है। उस स्थिति में कभी-कभी भगवान द्वारा सिखाया गया सहज ज्ञान और सहज योग भी कठिन अनुभव होने लगता है।

स्वरूपनिष्ठ होने से कथनी और करनी में समानता आ जाती है अन्यथा तो 'ओम शान्ति' शब्द द्वारा अभिवादन करने के पश्चात् भी 'आप आजकल कमज़ोर नज़र आ रहे हैं' जैसे शब्द वार्तालाप का रूप ले लेते हैं जिनमें देहाभिमान की गन्ध स्पष्ट है। अतः आत्मस्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए आत्म-स्मृति में टिकने का बार-बार अभ्यास करना पड़ता है। आत्म-स्मृति के लिए पुरुषार्थ की आधारशिला 'संकल्प' ही है। संकल्प के बिना स्थिति तो हो ही नहीं सकती। आत्मा स्वयं स्मृति स्वरूप है। यह स्मृति संस्कार के रूप में आत्मा में सदैव जीवित रहती है। संस्कार बिना कर्म के नहीं बन सकते और कर्म बिना संकल्प के नहीं हो सकते। अतः संकल्प ही ऐसी नींव है जिसके सुदृढ़, समर्थ, सशक्त व सात्विक होने से व्यक्ति मनुष्यत्व पद से ऊपर उठ कर देवत्व पद तक जा पहुंचता है और संकल्प के निर्बल होने से व्यक्ति देवत्व पद से पतित होकर मनुष्यत्व से भी गिर जाता है।

संकल्प शक्ति का प्रयोग

आत्म स्थिति को प्राप्त करने के लिए जो पुरुषार्थ किया जाता है उसमें संकल्प को विशेष स्थान प्राप्त है। संकल्प शक्ति का प्रयोग एक कुशल खिलाड़ी की भाँति बड़ी चुस्ती एवं सतर्कता से किया जाना चाहिए। अतः आत्मा का ज्ञान होने के पश्चात जो कुछ करना है उसका ज्ञान होना भी आवश्यक है। जैसे शरीर के लिए भोजन तभी लाभप्रद है जब उसका सेवन किया जाये अन्यथा कितना भी पौष्टिक आहार हमारे सामने क्यों न पड़ा हो परन्तु हम उसे यदि खाते नहीं तो उससे शरीर को शक्ति नहीं मिल सकती। उसी प्रकार आत्मा को स्वरूप स्थित, स्वधर्म स्थित करने अथवा आत्मा की खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए आत्मा के मिले हुए ज्ञान रूपी भोजन को बुद्धि रूपी दाँतों द्वारा चबा-चबाकर मन रूपी पेट तक पहुँचाना अथवा कानों से सुने हुए ज्ञान को मन तक पहुंचाना ही 'मनरस' अथवा 'अतीन्द्रिय सुख' प्राप्त करना है। कान से मन तक का यह रास्ता यदि हम तय नहीं करते तो यह 'कनरस' ही रह जाता है। ठीक उसी प्रकार जैसे भोजन मुँह में लेने के बाद भी चबाया न जाये और बाहर उगल दिया जाये तो वह व्यर्थ चला जाता है। वैसे ही यह मार्ग तय करने के लिए आत्म-ज्ञान के एक-एक ज्ञानबिन्दु को संकल्प के रूप में मानसपटल पर लाना होता है। 'मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ', इस संकल्प में तब तक कोई रस नहीं जब तक इस संकल्प के अर्थ स्वरूप में टिकने का अभ्यास नहीं किया जाता। यह संकल्प लेने के साथ-साथ ऐसा महसूस करना होता है कि मैं सचमुच शान्ति-स्वरूप हूँ, शान्ति का ही बिन्दु हूँ और कि शान्ति तो मेरा आदि-अनादि स्वधर्म है। उसी शान्ति की स्थिति में टिक जाना होता है। शान्ति क्या है, इसकी अनुभूति के लिए शान्ति की गहराई में उतरना होता है तभी शान्ति की अनुभूति होने लगती है और यह स्थिति अविस्मरणीय होती है। 'काश! यह अनुभूति सभी कर सकते', इस प्रकार की आवाज अन्दर से उठती है और विश्व शान्त नजर आने लगता है। निरन्तर शान्ति की अवस्था में टिककर जीवन नैय्या को खेना कितना सुखद सुहावना अनुभव है।

जब तक शान्ति की अनुभूति नहीं होती, दूसरा संकल्प नहीं उठाया जाना चाहिए अन्यथा तो वह बोझ बनकर रह जायेगा और शीघ्र ही थकान महसूस होने लग जायेगी। उपरोक्त संकल्प के स्वरूप में स्थित होने के पश्चात दूसरा सकल्प उठाना चाहिए यथा 'मैं आत्मा सूक्ष्म ज्योति बिन्दु रूप परम-धाम की रहवासी हूँ' इस संकल्प को भी प्रथम की भाँति स्वरूप में लाने के लिए तनिक विचार करो कि आत्मा का अत्यन्त सूक्ष्मतिसूक्ष्म स्वरूप कितना-सा है। फिर उसमें ५००० वर्ष का सेकेण्ड-सेकेण्ड का कैसा-कैसा पार्ट भरा हुआ है। फिर यहाँ से परमधाम कितना दूर है, वहाँ का वातावरण और वायुमण्डल कैसा है—इस सम्बन्ध में मिले हुए ज्ञान

को बुद्धि द्वारा अनुभव करना होता है। इसमें निश्चय की नींव बहुत मजबूत चाहिए इसी प्रकार आत्मा के सम्बन्ध में मिले हुए समस्त ज्ञान बिन्दुओं को बारी-बारी संकल्प के रूप में उठाना और फिर साथ-साथ उसके अर्थ स्वरूप में स्थित होना चाहिए। यह क्रम प्रतिदिन नियमित रूप से प्रातः एवं सांय कम-से-कम एक-एक घण्टा अनिवार्य रूप से तथा दिन में भी कार्य व्यवहार में रहते हुए बीच-बीच में सुविधानुसार अभ्यास में लाना चाहिए। आत्मा को देखने तथा समझने का भी निरन्तर अभ्यास करना पड़ता है और यह अभ्यास तब तक जारी रखना चाहिए जब तक कि आत्मा को देखने का अभ्यास स्वभाविक रूप में संस्कारों में नहीं आ जाता। फिर 'देख ही आत्मा को रहे हैं' 'समझ ही आत्मा रहे हैं', 'बात ही आत्मा से कर रहे हैं'—यह भावना संस्कार के रूप में पक्की हो जाती है और शरीर को देखते हुए भी उसकी तरफ आकर्षण नहीं होता। फ़रिश्तापन का अनुभव भी इसी अवस्था में होता है। साक्षी भाव की न्यारी स्थिति भी यही होती है।

आत्म स्थिति में स्थित होने से लाभ

आत्म-स्थिति में स्थित होने वाला मृत्यु के भय से छूट जाता है। उसकी दृष्टि-वृत्ति चंचल नहीं होती। वह सदैव हलकापन महसूस करता है। उसे बाप की याद सहज रहती है। वह सभी समस्याओं से ऊपर उठा रहता है तथा व्यर्थ के संकल्प-विकल्प से बच जाता है। उसकी बुद्धि में परेशानी नहीं रहती। उसका जीवन कमल पुष्प समान बनने से उसे बीता हुआ बचपन पुनः लौट आना अनुभव होता है। इस प्रकार आत्म-स्थिति का अभ्यास करने से चरित्र का विकास आरम्भ हो जाता है और अन्ततोगत्वा मनुष्य अपने देश व समाज की सच्ची सेवा करता है। आत्मिक दृष्टि होने पर वह स्वयं को जाति, धर्म, वंश अथवा कुल से ऊपर उठाकर सभी को परमात्मा की सन्तान समझ कर चलता है। जिससे साम्प्रदायिक दंगे, छुआछूत जैसी बुराईयों का उन्मूलन हो जाता है। स्वयं को आत्मा निश्चित करने से तथा अन्यों को भी आत्मा समझने से परस्पर भाई-भाई की भावना, विश्व बन्धुत्व की भावना जागृत होती है और दृष्टि-वृति शुद्ध होने से अपहरण, बलात्कार, खून, अनुशासनहीनता, जनसंख्या में अति वृद्धि, हड़ताल, तोड़फोड़, हिंसा, मिलावट, भाई-भतीजावाद, शोषण तथा दहेज जैसी बढ़ती हुई समस्यायें जड़ से समाप्त हो सकती हैं।

परम प्रिय परमपिता परमात्मा निराकार शिव बाबा की मधुर याद में,

(ब्र० कु० अमरचन्द्र गौतम, आगरा)

बोले संगम पे बाबा यूँ ही एक दिन,
नींद गफलत की सोये तो मैं क्या करूँ ?
मार्ग युक्ति से मुक्ति बताया मैंने,
राह टेढ़ी पे जाओ तो मैं क्या करूँ ?
ज्ञान सृष्टि की रचना का तुमको दिया,
वार माया के होंगे ये बतला दिया,
मोह-माया में फँस के तड़फते रहे,
याद मेरी भुलाई तो मैं क्या करूँ ?
बोले.....
सेवा करना तुम बच्चों का कर्तव्य है,
जिसमें देना सफलता मेरा काम है,
काम-याबी मिले होती कृपा मेरी,
देह अभिमान लाये तो मैं क्या करूँ ?
बोले.....
योग अग्नि जलाओ तो सुख पाओगे,
गर विकर्मी बनोगे तो पछताओगे,
कर्म करते हुये याद मेरी करो
गर मुझे भूल जाओ तो मैं क्या करूँ ?
बोले संगम पे बाबा यूँ ही एक दिन
नींद गफलत की सोये तो मैं क्या करूँ ?

चाहत ही पूरी हो गई तो क्या चाहिए?

(ले० ब्रह्माकुमार रमाशंकर पचौरी, आगरा)

"प्रभु मिलन हेतु महात्मा हो जाना"

मेरा जन्म एक सम्पन्न धार्मिक विचारों वाले परिवार में हुआ था। बचपन से ही मेरी प्रभु आराधना में विशेष रुचि रही है। सौभाग्य से मेरे इष्ट भोले बाबा ही थे। मैं 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का जाप किया करता था तथा एकान्त में बैठकर घंटों मनन चिन्तन किया करता था। दुनिया से मुझे वैराग्य वृत्ति रहती थी, मैं कहा करता था, "सब दुनिया बेकार है, बस ओ३म नाम सार है।" बचपन से ही शादी करने की इच्छा नहीं थी परन्तु घर वालों को यह अच्छा नहीं लगता था जिससे वे अप्रसन्न थे। दो नवम्बर १९७१ को मैं कुछ साधुओं से मिला जो आगरा के समीप कैलाश में रहते थे, वहाँ के एक बाल ब्रह्मचारी सन्त से मैं बहुत प्रभावित हुआ और अपनी पढ़ाई आदि सब कुछ छोड़कर सन्त बनकर चला गया, मैं एक सत्गुरु की तलाश में था, मेरा एक ही प्रश्न था कि, "परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो सकती है।" मैं मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन, ऋषिकेश, हरिद्वार आदि विभिन्न स्थानों पर काफी साधू, महात्माओं, महंतों से मिला परन्तु मुझे सत्मार्ग प्रदर्शन करने वाला कोई सत्गुरु नहीं मिला। वृन्दावन में मैं एक आश्रम में रहने लगा। वहाँ के वैष्णव सम्प्रदाय के महन्त का मुझसे बहुत स्नेह था, उन्होंने मुझसे कहा कि मैं तुम्हें अपने बाद यहाँ का महन्त बना दूँगा, काफी धन-सम्पदा आश्रम के नाम है। परन्तु यह प्रलोभन मुझे नहीं खींच सका, मेरी तो प्रभु मिलन की एक मात्र उत्कंठा थी।

"वापस घर आना तथा मायावी दुनिया में जाना"

मेरे सन्त हो जाने से परिवारजन बहुत व्याकुल थे, उन्होंने विभिन्न समाचार पत्रों में विज्ञापन निकलवाये तथा विभिन्न आश्रमों पर ढूँढा, मेरी माँ मरण शैय्या पर थी, उन्होंने कहा कि यदि तुम वापिस नहीं आओगे तो मैं यहीं यमुना जी में डूबकर मर जाऊँगी। घर वालों के ज़्यादा कहने तथा महन्त जी के कहने पर मैं वापिस लौट आया। कुछ दिन साधु वेष में ग्राम में रहा। फिर मैंने पढ़ाई शुरू कर दी, स्नातक होने के बाद मेरी नियुक्ति विद्युत विभाग में हो गई। संग दोष में आकर मैं भ्रष्ट हो गया और भ्रष्टाचार की चरम सीमा पर पहुँच गया। कुछ दिन बाद मेरी शादी भी हो गई और मैं विकारी बन गया। पाँचों विकारों ने मुझे अपने चंगुल में जकड़ लिया। मैं अत्यन्त दुःखी और अशान्त रहने लगा। सुख, शान्ति के लिए छटपटाने लगा, मंदिर जाता, भजन, पूजन, कीर्तन करता, रामायण, गीता का पाठ करता परन्तु सुख शान्ति से कोसों दूर था। दुःख और अशान्ति के काले-काले बादल दिनोंदिन सघन होते गये।

"आखिर प्रभु ने मेरी पुकार सुन ही ली"

एक दिन मैं बहुत दुःखी था। आर्त्त स्वर में भगवान को पुकारता हुआ अपने कार्यालय जा रहा था, "हे प्रभु, क्या यही जीवन है, इससे तो मृत्यु अच्छी है। हे प्रभो, आप मुझे कब मिलोगे, मेरा दुःख कब दूर होगा, मुझे सुख शान्ति कब मिलेगी? हे प्रभो, क्या मैं इसी तरह तड़पता रहूँगा? आदि-आदि"—रास्ते में मुझे मेरे साथ पढ़ा हुआ एक साथी मिला। उसके पास कुछ चित्र थे मैंने उनके बारे में पूछा। उसने कहा—"भाई, तुम तो बचपन से ही भगवान के लिए भटक रहे हो, राजामण्डी ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाओ, वहाँ तुम्हें भगवान मिल सकता है। मैं कई बार महात्मा गाँधी मार्ग पर स्थित संग्रहालय के नीचे

से गुज़रा था परन्तु मुझे उसका गेट न मिलने के कारण मैं अन्दर नही गया था। मैंने किसी से रास्ता भी नहीं पूछा था। खैर, वह दिन कार्यालय में मुश्किल से व्यतीत हुआ, मैं आतुर था कि कब पाँच बजें और मैं आश्रम जाऊँ। ११ जून सन् १९७६ मेरे भाग्याकाश में एक स्वर्णिम सितारे के समान है जब मैं ५ बजकर १५ मिनट पर "प्राचीन राजयोग संग्रहालय" पर पहुँचा। वहाँ ब्रह्माकुमार अशोक ने मुझे संग्रहालय देखने को कहा। शिवबाबा का परिचय मिलते ही मैं गद्‌गद हो गया, मुझे लगा कि मेरी जन्म-जन्म की प्यास बुझ गई। जिस मंज़िल को मैं ढूँढ़ रहा था वह मुझे मिल गई, अब मुझे भटकने की आवश्यकता नहीं है। संग्रहालय देखने के बाद मैंने अनुभव किया कि यह ज्ञान किसी मनुष्यात्मा का नहीं बल्कि किसी परमशक्ति का है। आश्रम के पावन एवं शान्त वातावरण ने, बहिन-भाइयों के दिव्य और अलौकिक चेहरों तथा मृदु व्यवहार ने मुझ पर एक अमिट छाप छोड़ दी। वह दिन मेरे जीवन का एक परम सौभाग्यशाली दिन था जिस दिन मुझे यह बेहद की लॉटरी मिली। दूसरे दिन से ही मैंने साप्ताहिक पाठ्यक्रम शुरू कर दिया। तीसरे दिन बहिन जी ने मुझे राजयोग की विधि बता दी। मुझे योग में परम आनंद एवं शान्ति की प्राप्ति हुई, मैं कोर्स पूरा करके नियमित ज्ञानामृत का पान करके धन्य हो उठा, अपने भाग्य के गीत गाने लगा। कुछ दिन बाद मुझे शिवबाबा, श्री कृष्ण, कलियुगी दुनिया के विनाश तथा सतयुगी दुनिया के आगमन के साक्षात्कार हुए।

दिव्य परिवर्तन

कुछ ही दिनों में मुझ में दिव्य परिवर्तन हो गया, मेरी सारी बुरी आदतें व्यसन छूट गये। मैं भ्रष्ट हो गया था, अनैतिक रूप से अर्जन करने लगा था तथा संगदोष से मेरा आहार-विहार अति दूषित हो गया था। ज्ञान ने मेरी काया ही पलट दी। सभी मित्र सम्बन्धी आश्चर्य चकित रह गये, वे लोग कहने लगे— तुम्हारे ऊपर किसने जादू कर दिया। कुछ लोग मेरी मज़ाक उड़ाते हुए कहते, "नौ सौ चूहे खाय के बिल्ली हज को चली।" घर वालों ने तथा ससुराल वालों ने भी कड़ा विरोध किया, सबने सोचा कि कहीं फिर यह संन्यासी न हो जाये। मैंने उनको स्पष्ट बता दिया कि मेरा संन्यास सिर्फ बुराइयों का है। इसके अतिरिक्त कई अवरोध और बंधन मेरे मार्ग में आये, आर्थिक स्थिति भी शोचनीय हुई, परन्तु शिव बाबा को साथी बनाकर मैं अपनी मंजिल पर बढ़ता ही गया और बढ़ता ही जा रहा हूँ। जिस तरह से गूँगा व्यक्ति गुड़ खाकर के उसके स्वाद का वर्णन नहीं कर सकता, उसी तरह मैं भी ईश्वरीय अनुभूति के आनंद का वर्णन नहीं कर सकता। अंत में मैं तो यही कहूँगा—

चाहत ही पूरी हो गई तो क्या चाहिए।
भगवान हमको मिल गया तो क्या चाहिए॥

—:०:—

(मीठी वाणी बोलिये, सब को सुख दीजिये पृष्ठ १९ का शेष)

कटु वचन से हम दुःखी होते हैं तो यह स्वमेव सिद्ध है कि हमने उसकी बातों को ग्रहण किया है और यह ग्रहण करना ही हमें दुःख देता है।

अतएव हमें मीठे बोल और शुभचिन्तन को अपने जीवन का एक अभिन्न अंग बना लेना चाहिये और इसी में हमारा कल्याण है।

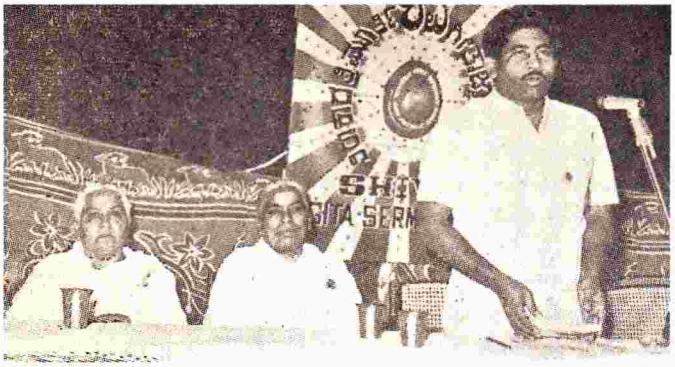

तिरूपति आध्यात्मिक संग्रसालय के वार्षिक समारोह के अवसर पर भ्राता पनचतइया (रजिस्ट्रार एस० वी० यूनिवर्सिटी तिरूपति) अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं, ब्र० कु० सुन्दरी, ब्र० कु० मनोहर इन्द्रा मंच पर बैठी हैं।

रायगढ़ में आयोजित सम्मेलन में मुख्य अतिथि भ्राता घनश्यामदास अग्रवाल, ब्र० कु० आरती, भ्राता रामस्वरूप रतेरिया मंच पर दिखाई दे रहे हैं।

वाराणसी आध्यात्मिक मेले के शुभ अवसर पर एक विहंग शोभा यात्रा का आयोजन किया गया, यह चित्र उसी अवसर का है।

झालावाड़ में शिवरात्रि के अवसर पर कुलदीप शर्मा अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी पधारे थे तथा मुख्य चिकित्सा एवं जिला स्वास्थ अधिकारी प्रवचन कर रहे हैं।

वाडेगांव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी हुई। उस समय वहां के सोसायटी के चेयरमैन, सरपंच इत्यादि दिखाई दे रहे हैं।

कोटूर क्षेत्र में प्रदर्शनी के अवसर पर सामग सेवा मंडल की अध्यक्षा सिधालिंगना गौंडा अध्यक्ष, वीरभद्रय्यजी व अन्य ब्र०कु० बहनें बैठी हैं।

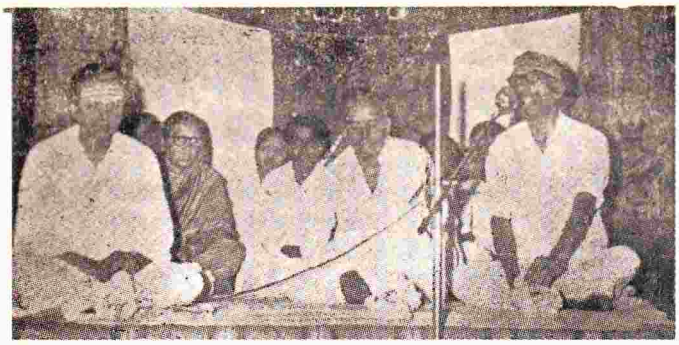

[illegible]ज्जर सेवा केन्द्र की ओर से स्मृति दिवस के अवसर मंच पर ओम-प्रकाश जी, बालकृष्ण जी, श्यामसुन्दर जी व अन्य भाई-बहन बैठें हैं।

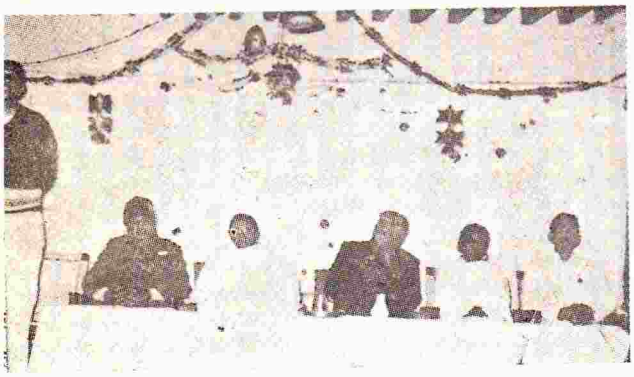

फर्रुखाबाद में स्मृति दिवस मनाया गया, बाबा के चित्र का अनावरण करते हुए भ्राता एम० सी० मेहरा दिखाई दे रहे हैं, ब०कु० सुमन, प्रभा, ममता खड़ी हैं।

विजयबाड़ा डि० जेल में कार्य क्रम रखा गया। कैदियों को ब्र० कु० साविता परमात्मा का परिचय दे रही हैं। मंच पर जेल अधिकारी बैठें हैं।

e

करते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें व ब्रह्माकुमार भाई दिखाई दे रहे हैं

सहारनपुर सेवा केन्द्र की ओर से एक प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें मार्ग प्रदर्शना ब्र० कु० प्रकाश इन्द्रा व ब०कु० भगवतीजी कर रही हैं।

तुमकुर सेवा केन्द्र की ओर से एक प्रदर्शनी जिसका उद्घाटन मुर्नी के जज ने किया साथ में अन्य ब्र० कु० भाई-बहन खड़े हैं।

धर्म ग्लानि—एक तार्किक विवेचन

(ब० कु० प्रेमसिंह गुलबर्गा)

प्रायः प्रत्येक प्रवचनकार, अध्यात्म वक्ता या धर्म-प्रवक्ता को हम यह कहते हुए सुनते हैं कि जब-जब धर्म की ग्लानि और अधर्म का ताण्डव होता है, तब-तब अधर्म का नाश कर सद्धर्म की स्थापना करने भगवान् अवतरित होते हैं। यह कथन सत्य तो है ही परन्तु विचारणीय तो यह है कि धर्म की ग्लानि है क्या ? धर्म-ग्लानि को जानने से पूर्व धर्म को जानना आवश्यक है—कारण यह है कि ईश्वर स्थापना तो धर्म की करते हैं।

धर्म क्या है और धर्म-ग्लानि क्या है ?

संस्कृत के 'धृ' शद् से यह 'धर्म' बना है। 'यद् धारण्यति तद् धर्मम्' अर्थात् दिव्य गुणों की धारणा अर्थात् दिव्य गुणों को आत्मसात् करना ही धर्म है। धर्म स्थापना का अर्थ यही होगा कि मानव मात्र में दिव्य गुणों का बीजारोपण कर उनमें श्री वृद्धि करना और मानव में घर कर गये विकारों को नष्ट करने की युक्ति बताना। जहाँ मानव आकंठ विकारों के दलदल में फँसकर त्राहि-त्राहि कर रहा होता है और उसे उस दलदल से निकालने में जब मानव सम्पूर्ण असफल हो जाते हैं, तब ईश्वर को अवतरित होना पड़ता है। मानव अपनी मानवीयता से हट जाता है स्वयं, स्वयं का ही शत्रु बन स्वयं को ही नष्ट भ्रष्ट कर कंगाल बन जाता है और दुःख के सागर में डुबकी खाता हुआ हृदयान्तराल से ईश्वर का आवाहन करता है, तब ईश्वर को आना पड़ता है।

इस प्रकार धर्म-ग्लानि अर्थात् दिव्य गुणों का अभाव, दुर्गुणों का सावन, सत्य, अहिंसा और प्रेम का रुदन, झूठ, हिंसा और काम लोलुपता का नर्तन मानवीयता मृत्यु शय्या पर तो दानवीयता का अट्टहास, समाज है सामाजिकता नहीं, राज्य है पर नीति नहीं; विद्यालय हैं पर विद्या नहीं, परिवार हैं पर पारिवारिक सम्बन्ध नहीं। जहाँ जल और वायु तक दूषित हों, ऋतु, ऋतु न हो अर्थात् प्रकृति ही प्रक्षुब्ध और हानिकारक हो—यही तो धर्म ग्लानि का परिणाम है।

धर्म-ग्लानि का समय

उपरोक्त प्रकार की धर्म-ग्लानि भारतीय शास्त्रों के अनुसार कई बार हुई है और जब-जब हुई है तब-तब ईश्वर का अवतरण चित्रत और वर्णित है। उनमें भी रामावतार और कृष्णावतार का गायन अधिक है। तर्क शास्त्र का अध्यन होने के नाते मैं इतना अवश्य कहूँगा कि तर्क सत्य का प्रतिपादन करना है; यदि नहीं तो वह कुतर्क है। ऐसे तो कृत् (सत्य), त्रेता, द्वापर और कलि—इस रीति से युग चार ही माने गये हैं। अब ऐसी धर्म-ग्लानि कब-कब हुई ? उत्तर दिया गया है कि युगे-युगे हुई। प्रत्येक युग में भी कितनी बार हुई ? जितनी बार पुराण कर्ता ने अपनी कृति में लिखी।

विवेक का प्रयोग कीजिये

कहा गया है कि सतयुग में धर्म चतुष्पाद होता है और दृढ़ होता है। यदि सर्वत्र धर्म हो, तब तो धर्म-ग्यानि तो दूर रही अधर्म का प्रवेश भी तर्क-सिद्ध नहीं हो सकता। यदि दुर्ग के चारों ओर सतर्क सेना घिरी हुई हो तो शत्रु का प्रवेश नितान्त असम्भव है। है ना ?

किन्तु तब भी पौराणिकों ने इस एक ही युग में मत्स्य, कूर्भ, वाराह, वामन, और नृसिंह—पाँच अव-

तारों की सृष्टि की है। और ये अवतार जीव-विज्ञान के अनुकूल नहीं हैं।

दूसरी ओर त्रेतायुग में राम-परशुराम दो अवतार हैं और दोनों ही विष्णु के साकारावतार होने पर भी एक दूसरे से अनभिज्ञ हैं। दोनों के कर्तव्य भी भिन्न हैं। **एक क्षत्रीय कुल विनाशक तो दूसरा क्षात्र धर्म परिपालक।** राम स्वयं-विष्णु के ही अवतार हैं यह जानने पर परशुराम की शरणागति। यहाँ भी अवतार सिद्ध नहीं होता। अस्तु। त्रता में धर्म त्रिपादीय है "राम राजा राम प्रजा, राम सारा संसार है"—यह गायन ही सिद्ध करना है कि यहाँ धर्म-ग्लानि हो नहीं सकती।

द्वापर में कृष्णावतार की मान्यता है। यह पूर्णावतार माना गया है। महिमा भी उपरोक्त सभी अवतारों से अधिक है। यहाँ धर्म ही पर स्थित माना गया है। इस कथन से भी धर्म-ग्लानि सिद्ध नहीं होती। गीतोपदेश का काल भी यही माना गया है परन्तु गीतोपदेश से अर्जुन को "नष्टो मोह: स्थिति लब्धः हुई—यह भी सत्य नहीं है कारण लिखा है कि स्वपुत्र अभिमन्यु की मृत्यु के पश्चात् वह मोह वश हो अग्नि प्रदेश के लिये सिद्ध होता है। अन्त में स्वयं धर्मराज युद्धिष्ठिर स्वर्गारोहणादि समय कलियुग को बद्ध-मुक्त कर जाते हैं। इस प्रकार महाभारतीय गीताकार के कृष्णावतरण का उद्देश्य भी सफल होता दिखाई नहीं देता।

कलियुग पर दृष्टिपात

कलियुग में धर्म के ध्वज को अधर्म अपने हाथ में ले अपना कार्य प्रारम्भ करता है। यहाँ कोई निश्चित अवतार नहीं है। कई ईश्वर को न मानने वाले गौतम बुद्ध को ही ईश्वरावतार मानते हैं तो कई महाराष्ट्र के पाण्डुरंग को। कई रिद्धि-सिद्धि प्राप्त स्वयं को भगवदावतार घोषित करते हैं तो कई प्रत्येक जीव को। अस्तु। हाँ संभावनीय कल्की अवतार को सभी मानते हैं। परन्तु इन सब के बावजूद हुआ क्या ? तर्क यही कहता है कि धर्म-ग्लानि ! फिरंगियों को छोड़ ही दीजिये, १९४७ के बाद से ही शुरू करेंगे। स्वतंत्र भारत के राष्ट्र-चिह्न पर लिखा गया 'सत्य मेव जयते'। किन्तु असत्य रूपी भेड़िये ने सत्य के वेश में समाज में अपना स्थान सुभद्र कर लिया है। आज मानव मात्र की यह धारणा है कि झूठ के सिवाय कार्य-व्यवहार होने वाला है नहीं। जिस भारतीय की जिह्वा पर असत्य आ नहीं सकता था वहाँ आज असत्य का साम्राज्य है।

अहिंसा ! अहिंसा के प्रतिपादक (गान्धी जी) को ही हिंसा में लपेटकर उसे सदा के लिये दफ़ना दिया गया। अहिंसा की रक्षा के लिये ही आज करोड़ों सैनिक मौत की घाट उतारे जा रहे हैं। अहिंसा के नाम पर आज मनुष्य एक हिंसक पशु से भी हज़ार गुणा भयानक बन गया है। इस विश्व-सृष्टि मात्र को कई बार विनष्ट करने के सामर्थ्य युक्त बारूद की ढेर पर बैठ कर अहिंसा का पाठ पढ़ने वाला मानव आज अपनी हिंसात्मक अन्त्य की अन्तिम घड़ी गिन रहा है।

प्रेम ! प्रेम का बाना काम ने पहना और भारत की जनसंख्या ३५ से ७० करोड़ बना दी ! मानवीय सम्बन्धों का मलियामेट कर दिया !

बस ! लोभ, अहंकार के प्रत्यक्ष यहीं आप हैं ही। क्या ऐसी धर्म (दिव्यता की) ग्लानि पूर्व काल में हो सकती है ? तर्क नहीं मानता। तर्क तो यही कहता है कि यही धर्म-ग्लानि है और इसे आने (elimax) प्राप्त धर्म-ग्लानि का सर्वनाश सामने खड़ा है। कारण कि अति का अन्त सुनिश्चित है।

किन्तु अन्त के पूर्व ही आदि की व्यवस्था अर्थात् धर्म-ग्लानि के विनष्ट होने के पूर्व ही सह धर्म की संस्थापना अनिवार्य है। और उस स्थापना के कर्तव्य को स्वयं ईश्वर आज प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण मानबी तन के माध्यम द्वारा कर रहे हैं। यह गुप्त सत्य है। और इस गुप्त सत्य की प्रत्यक्षता का भगीरथ प्रयत्न यह ब्रह्माकुमारी-ईश्वरीय विश्व-विद्यालय कर रहा है। आशा है कि इस सत्याँश से सुविज्ञ पाठक अवगत होंगे ही। अस्तु। ●

सतयुग और सतोप्रधान प्रकृति

ब्र० कु० रमेश शाह—गामदेवी, बम्बई

यह सृष्टि एक नाटक है, ऐसा कईयों ने माना है। नाटक में अनेक प्रकार के खिलाड़ी होते हैं। साथ में नाटक का आयोजक, प्रयोजक, दिग्दर्शक आदि भी होते हैं। साज़ और संगीत भी होता है। साज़ के कारण नाटक रुचिकर तथा दर्शनीय बनता है। और उसी कारण बहुत खर्च करके साज़ को सजाते हैं।

सृष्टि रूपी बेहद के नाटक में त्रिमूर्ति स्वरूप का खेल भी अनेकों का है। अनेक त्रिविध रूप के खिलाड़ी में एक रूप है—परमात्मा, दूसरा रूप है—पुरुष (आत्मा) और तीसरा स्वरूप है—प्रकृति।

मानव ने शुरू से इन तीनों खिलाड़ियों को यथार्थ रूप से समझने का प्रयत्न किया है। मैं कौन, मैं कहाँ से आया, मेरा रचयिता कौन तथा यह प्रकृति रूपी सृष्टि की रचना कैसे हुई, इन सब बातों की स्पष्टता जानने के लिए उसने अपनी बुद्धि का प्रयोग किया और उसी के आधार पर अपने अनेक मत प्रदर्शित किये। ये मत बाद में तत्वज्ञान का रूप धारण करके सबके सामने प्रकाशित हुए। और आगे बढ़कर ये नाटक से अपना पार्ट कैसे समाप्त करें, उसी दृष्टि से धर्म की रचना हुई। धर्म का एक हेतु इस खोज की पूर्ति का भी है। वेद आदि धर्म ग्रन्थों में इसीलिए प्रकृति उपासना आदि के बारे में कई बातें लिखी गई हैं।

परमात्मा, पुरुष तथा प्रकृति तीनों का रूप एक ही है--ऐसा ही कईयों ने माना है। एक होते हुए भी लीला-अर्थ विविध रूप की रचना हुई। और इस विविधता में एक का दर्शन करो—ऐसा भाव अद्वैत ने दिया और उसी एकता के आधार पर प्रकृति को उन्होंने आखिर में मिथ्या स्वरूप कहा। इन तीनों के स्वरूप तथा लीला के बारे में अनेक मत है, जिनके कारण विशिष्ट अद्वैत, शुद्ध अद्वैत, शुद्धाशुद्ध अद्वैत आदि मान्यता अद्वैत मार्गियों में हुई। सांख्य शास्त्र भी अपनी अलग मान्यता इन तीनों के स्वरूप तथा गुण कर्त्तव्य में मानता है।

अन्य धर्मों में भी इन तीनों के आपसी सम्बन्ध पर विशेष मत का दर्शन कराया है। और फिर उनके अन्दर भी जो अलग-अलग पंथों की रचना हुई है, उसमें इन तीनों के बारे में जो विचार भेद है यह भेद ही पंथ भेद का मुख्य कारण बना है।

धर्म और विज्ञान का इन तीनों के बारे में विचार भेद है। विज्ञान को अपनी प्रयोगशाला में परमात्मा तथा पुरुष अर्थात् आत्मा का दर्शन नहीं हुआ। उसी कारण विज्ञान सिर्फ़ भौतिक अर्थात् प्राकृतिक बातों की खोज में चला। और आज धर्म का क्षेत्र आधिभौतिक (Metaphysical) और विज्ञान का क्षेत्र भौतिक (Physical) बन गया।

प्रकृति को जानने की खोज में, ज्ञान सागर शिवबाबा का ज्ञान विज्ञान की क्या मदद कर सकता है? यह एक सोचने की बात है। वैज्ञानिक जब अपनी खोज में शिव बाबा द्वारा प्राप्त ज्ञान का प्रयोग करेगा तब क्या होगा? आज के वैज्ञानिक को यह परमात्मम् ज्ञान जानने से क्या मदद मिलेगी और उससे हमारा जो दैवी सतयुगी सृष्टि की स्थापना का कर्त्तव्य हैं, उसमें विज्ञान का क्या योगदान होगा?

प्रकृति बहुत शक्तिवान है। प्रकृति के बगैर हम आत्माएं भी जीवात्मा बन नहीं सकती और ये रंगमंच पर कोई लीला नहीं होती। आज भी विज्ञान प्रकृति की तरह शरीर उत्पादन नहीं कर सकता। प्रकृति दानी भी है। एक दाना (Seed) जमीन में

बोने से १०० दाने ये महादानी प्रकृति देती है। जंगल, वनस्पति, पशु, पक्षी आदि सब प्रकृति की गोद में ही पलते हैं। प्रकृति की शक्ति के विशेष प्रयोग से बिजली आदि शक्ति प्राप्त होती है। प्रकृति के द्वारा ही ये कोयला (Coal), तेल (Oil) आदि शक्ति-प्रदायक चीजें बनी-बनाई हमें मिलती हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य के दृश्य तथा उसके रंग-बिरंगे साज़ हमें आज भी एक महान कलाकार की याद दिलाते हैं। प्रकृति में जितनी शक्ति है, उतनी शक्ति पैदा करना मानव के लिए असम्भव है। सूर्य जितनी रोशनी और गरमी अगर कृत्रिम साधनों द्वारा उत्पन्न करनी होती तो न जाने कितने अरबों रुपयों का खर्च रोज करना पड़ता। प्रकृति की इस अमाप, अखुट शक्ति को देखकर ही शायद शास्त्र वेत्ताओं ने प्रकृति को परमात्मा की उपाधि दे दी होगी।

विज्ञान, प्रकृति और प्राकृतिक उपलब्धियों की खोज में है। परन्तु इस खोज में कुछ ऐसी बातें हैं, जिससे वह अनजान है। और इन बातों का ज्ञान सिर्फ़ शिव बाबा ही दे सकते हैं।

पहली बात यह है कि जैसे अभी आत्मा तमोप्रधान बनी है और उन्हें परमात्मा ज्ञान योग के बल से सतोप्रधान बना रहे हैं ऐसे ही प्रकृति भी तमोप्रधान बनी है। तमोप्रधान प्रकृति और सतोप्रधान प्रकृति के बीच क्या फर्क है, वह फर्क आज का वैज्ञानिक यदि समझ जाय तो वह सतोप्रधान प्रकृति की पूर्ण रूप से जानकारी तथा उससे उपलब्ध होने वाले सुख के साधनों की ही वह खोज करेगा।

विचारों का प्रकृति पर प्रभाव पड़ता है—यह बात तो आज का वैज्ञानिक मानने के लिए तैयार है। लंडन के ओलम्पीआ में एक प्रकृतिविद् ने हिंसक तथा प्रेम के विचार वाले मनुष्य का छोटे वृक्ष पर क्या प्रभाव पड़ता है वह प्रयोग करके दिखाया था। शिवपिता की याद में स्थित रहकर भोजन बनाने से स्मृति का अन्न पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा उस अन्न शुद्धि से मनःशुद्धि की प्रक्रिया में क्या सम्बन्ध है, वह तो हम सब ब्राह्मणों का रोज का अनुभव है। भोग लगाकर तथा शिव बाबा की स्मृति में आहार करने से मन पर क्या प्रभाव पड़ता है, वह भी हम सबका अनुभव है। आज का वैज्ञानिक यह सूक्ष्म प्रभाव और परिवर्तन का अभ्यास करे तो उससे उन्हें कई विशेष भौतिक रहस्यों का अनुभव हो।

आज वैज्ञानिक का योगदान सिर्फ विनाश के कार्य में है। जब सतोप्रधान प्रकृति, उसका स्वरूप, शक्ति तथा प्रयोग का अनुभव वैज्ञानिक करेगा तब उसके अनेक रूप वैज्ञानिक श्रेष्ठ कार्य में लगा सकेगा। जैसे आज जेल में अनेक कैदी हैं। उनको सुधारने के लिए सिर्फ़ स्थूल प्रयोग अर्थात् पढ़ाई की जाती है। परन्तु अगर अन्न का मन पर क्या प्रभाव है। इस बात पर विशेष प्रयोग यदि वैज्ञानिक करे और उनके प्रयोग जेल के कैदियों पर हो तो आन्तरिक परिवर्तन कैदियों का हो सकता है। आज का वैज्ञानिक सिर्फ शारीरिक तन्दुरुस्ती के ख्याल से कई विटामिन्स (Vitamins) युक्त आहार (Food) बनाता है। फिर मानसिक शुद्धि के ख्याल से नये प्रकार के विटामिन्स युक्त आहार की उपलब्धिओं का आविष्कार करने के लिए वैज्ञानिक प्रयत्नशील होगा।

सतयुग अर्थात् जहाँ सतोप्रधान आत्मायें और सतोप्रधान प्रकृति का सुमेल है। अगर वहाँ सतोप्रधान आत्मायें हों परन्तु प्रकृति सतोप्रधान के बजाय सतो या रजो हो तो वह सतयुगी सृष्टि को हम संपूर्ण सुख की दुनिया नहीं कहेंगे। अर्थात् सतयुगी सृष्टिकी स्थापना मे प्रकृति परिवर्तन का कार्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी परिवर्तन अर्थ प्राकृतिक आपत्ति तथा अन्तर्राष्ट्रीय अणु युद्ध आदि का प्रयोग परमपिता परमात्मा कार्य में लगाते हैं। विनाश के तीन मुख्य साधनों में दो प्रकृतिजन्य हैं और एक मानव वृत्ति और व्यवहार पर आधारित है। इसी से हमें पता चलता है कि प्रकृति का विश्व परिवर्तन में क्या योगदान है। और इसमें एक साधन प्रकृति के स्वभाविक स्वरूप का है तो दूसरा प्रकृति के साधनों को मनुष्यत्माओं द्वारा हुआ संशोधन है। इस विषय पर मैं ज्यादा यहाँ नहीं

लिखता क्योंकि 'प्रकृति का विश्व परिवर्तन में योगदान' इस विषय पर तो एक किताब लिखी जा सकती है।

आज के वैज्ञानिक प्रदूषण (Pollution) अर्थ अनेक प्रकार के प्रयोग कर रहे हैं। बड़े-बड़े कारखानों आदि से निकलने वाली गैस या व्यर्थमादा (Industrial waste) के कारण पानी, हवा आदि प्रदूषित होते हैं। विकारों ने मानव की प्रवृत्ति को प्रदूषित किया है। उसी तरह पहले बहुत बड़े-बड़े जंगल थे। वहाँ की वनस्पति हवा में से ज्यादा कार्बन डाइ-आक्साईड (Corbon dioxide) को चूस कर वापस ऑक्सीजन (Oxygen) देती थी जिस कारण हवा में २८% Oxygen का बैलेन्स रहता था। आज सभी जंगल को काट रहे हैं। अगले तीन वर्ष में सिर्फ ब्राजील (Brazil) ही सारे विश्व के जंगल का १०% हिस्सा जितना हिस्सा काटेगा। जैसे शरीर में फेफड़ों द्वारा रक्त शुद्धि होती है ऐसे फोरेस्ट रूपी फेफड़ों से १०% फेफड़े खत्म होंगे। जिस के कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न होंगी। शुद्ध हवा और विशुद्ध प्रकृति मानवीय जीवन के लिए बहुत जरूरी है। यह जरूरत प्रकृति अपने अनेक रूपों से पूरा करती है। तो जैसे ये विशुद्धि कारण के लिए विज्ञान प्रयोग कर रहा है उसी तरह से ऐसे उपकर्णों की जरूरत है जिससे प्रवृति तमोप्रधान से सतोप्रधान बने।

प्रकृति को प्रदूषित करने का एक कारण बढ़ती हुई जनसंख्या भी है। जनसंख्या के विस्फोट ने अनेक प्राकृतिक समस्यायें पैदा की हैं। सतयुग में जनसंख्या कम है और प्रकृति का अपने साम्राज्य के विस्तार अर्थ पूर्ण स्वतन्त्रता है। तब मानव जीवन के कारण प्रकृति प्रदूषित नहीं होगी। लेकिन सिर्फ जनसंख्या की वृद्धि प्रकृति को प्रदूषित नहीं करती है परन्तु मानव की प्रदूषित वृत्ति तथा प्रवृत्ति भी प्रकृति को प्रदूषित करती है। उसने निसर्ग को तथा पशु-पक्षियों को भी प्रदूषित किया है। विज्ञान ने संशोधन किया है कि संगीत बजता है तो उस संगीत के परिणामस्वरूप गाय ज्यादा दूध देती है। अश्व आदि भी अपने मालिक को पहचानते हैं तो उन्हें आपत्तियों से बचाते हैं। प्रेम का असर पशु-पक्षियों पर भी होता है तो जरूर सतोप्रधान देवताओं के प्रेम का असर वहाँ प्रकृति तथा पशु-पक्षियों पर भी होगा। वैज्ञानिक इन सूक्ष्म साधनों का उपयोग अपने कार्यों में करे।

आज वैज्ञानिक मन के स्पंदनों का आविष्कार करने के लिए प्रगतिशील है। उसने डेल्टा वेवस आदि का संशोधन किया है। योग आदि के मन के तरंगों पर क्या प्रभाव होता है, इस पर प्रयोग कर रहा है। उसी तरह से मनुष्य की सतोप्रधान वृत्ति तथा प्रवृत्ति का प्रकृति पर क्या प्रभाव है उस पर वैज्ञानिक (Scientist) प्रयोग करे तो अच्छा है।

सतयुग की सतोप्रधान प्रकृति की महिमा तथा वर्णन मीठे अव्यक्त बाप दादा ने २-१-१९८० की अव्यक्त मुरली में की है। कवि की कविता की तरह अनुपम लाजवाब प्रकृति के गीत और गीत का गुंजन मन भावन होगा। ऐसी प्रकृति तथा उसी के अनुपम सौन्दर्य ने मनुष्य को प्रकृति की ओर खींचा है। सतोप्रधान प्रकृति परमपिता परमात्मा के विश्व-परिवर्तन के कार्य के अंतर्गत एक परिणाम है। साथ ही उसी मुरली से ये भी सिद्ध शिव बाबा ने किया है कि तमोप्रधान प्रकृति उदंड और उच्छृंखल है परन्तु सतोप्रधान प्रकृति मानव की सेवा में नितान्त खड़ी रहेगी। सतयुग के भाग्यवान देवता कितने भाग्यशाली हैं कि वह प्रकृति जीत, प्रकृति के स्वामी थे, वह प्रकृति जिन्हों की दासी थी। प्रकृति को जीतने कारण तो देवताओं की आयु भी १५० वर्ष की थी। जन्म व्यवस्था भी उन्हों की निराली थी। वर्तमान विज्ञान ने प्रकृति को अपनी दासी बनाने का प्रयत्न किया परन्तु कई बातों में आज भी विज्ञान प्रकृति का दास है। प्रकृतिजीत बनने का यह राजपथ विज्ञानी सीख ले तो विज्ञान भी मानव की सेवा में विशेष मददगार बनेगा। विज्ञानी और राजयोगी फिर एक ही सिक्के की दो बाजू होंगी भौतिकता और आध्यात्मिकता के बीच जो आज भेद है वह मिट जायेगा। और उसी कारण तो शिवबाबा कहते

हैं कि विज्ञान भी स्वर्ग में १००% सुख के साधन निर्माण करेगा।

वैज्ञानिक अगर प्रकृति परिवर्तन के कार्य में मददगार बने तो परमपिता परमात्मा की कई प्रेरणाओं को पाकर उनको साकार रूप देने का प्रयत्न करेगा तो उनकी साधना में शिवबाबा का विशेष बल भरेगा। जैसे उसी २-१-८० की अव्यक्त मुरली में शिवबाबा ने कहा है कि वहाँ के महलों के अन्दर विमानों की लाईन लगी होंगी और विमान भी चलाने में बहुत सहज होंगे। एटॉमिक एनर्जी के आधार पर सब काम चलेगा। यह आप लोगों के कारण लास्ट इन्वेन्शन निकलनी है।" तो अन्तिम संशोधन के प्रति वैज्ञानिक विशेष ध्यान दें तो वह अपना कार्य इस प्रेरणा के बल पर जल्दी कर सकेगा। अन्तिम संशोधन (last invention) जल्दी हो जाय तो अन्तिम युद्ध (last war) भी जल्दी हो जाय और हम सब जल्दी से अपने घर वापस जा सकें। विनाश, इस अन्तिम संशोधन के लिए ही रुका है—ऐसा लगता है। तो क्यों नहीं हम इन अपने वैज्ञानिक मित्रों की (जो विमान आदि बनाने में ज्यादा व्यस्त है) सेवा करें? तेल के बढ़ते हुए भाव को देखकर लगता है कि ऐटोमिक एनर्जी का विशेष उत्पादन होगा। राजयोगी की आत्मिक एनर्जी और वैज्ञानिकों की एटॉमिक एनर्जी का सुमधुर सुमेल ही प्रकृति को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनायेगा और सतोप्रधान विश्व अर्थात् स्वर्ग इस सृष्टि पर प्रस्थापित होगा। तमो का मौत निकट ही है। जागो, हे वसुंधरा के वैज्ञानिको!

गीत

लेखक बी० के० मोहन (माउंट आबू)

(स्थाई) कर्म करो ऐसे भाई तुम, पड़े ना फिर पछताना
एक दिन तो धर्मराज को, पड़ेगा मुख दिखलाना
भाई कर्म करो·····

(१) मन में औरों के लिए, बुरा ना सोच चलाओ
निन्दा करता है जो तुम्हारी, अपना उसे बनाओ
आँखों से कब बुरा ना देखो, पड़े ना आँख झुकाना
कर्म करो ऐसे·····

(२) मुख से औरों को दुःख देने, वाले बोल ना बोलो
अपने मुख से ज्ञान रत्न भण्डारे अब तुम खोलो
कानों से कब सुनो ना ऐसा, पड़े जो कान खिचाना
कर्म करो ऐसे·····

(३) इन पावों से चल कर कभी बुरी तरफ ना जाओ
अपनी कर्म कहानी पर कभी ना दाग लगाओ
हाथों से कुछ करो ना ऐसा पड़े जो हाथ कटाना
कर्म करो ऐसे·····

(४) ऐसा जीवन हो जो हँसते हँसते घर को जाओ
धर्मराज के आगे तुम निर्भय होकर जाओ
ऐसा ना हो खाता अपना पड़े जो वहाँ पछताना
कर्म करो ऐसे·····

चन्द्रपुर में अव्यक्त दिवस मनाया गया। सी आई डी इन्सपेकटर अपने ईश्वरीय अनुभव व्यक्त कर रहे है, साथ में ब्र० क० बहने व भाई बैठें हैं।

जयपुर राजापार्क सेवा केन्द्र की ओर से अव्यक्त दिवस मनाया गया मंच पर मुख्य अतिथी भ्राता के बी राजनआयकर आयुक्त, ब० कु० निर्मला बैठी हैं।

पुरी में केथोलिक चर्च द्वारा आयोजित एक सेभीनार यें ब्र०कु० निरूपमा व ब्र०कु० भारती पंच पर बैठी दिखाई दे रहो हैं।

हुबली में अव्यक्त दिवस पर मंच पर बाएं से दायें ब्र० कु० बसुवराज, अतिथीगण व ब्र० कु० बहनें दिखाई दे रही हैं डि० कमि० अपने विचार व्यक्य कर रहे हैं।

गोवा सेवा केन्द्र की ओर से एक प्रदर्शनी रखी गयी। मंच पर कण कवली के सरपंच व ब्र० कु० बहनें बैठी हैं।

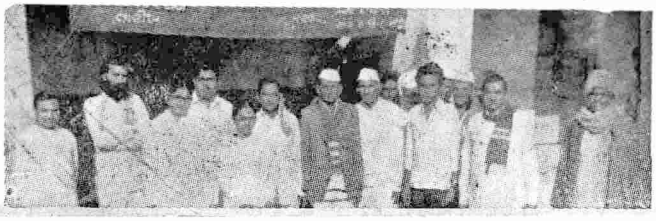

जाम नगर सेवा केन्द्र की ओर से शेठ वडाला गांव में आ० प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। फंकशन अवसर पर कालरिया सपरपंच जी ब्र०

k

चण्डीगढ़ में शिव जयन्ती महोत्सव पर हरियाणा के राज्यपाल भ्राता जी डी तापसे भाषण कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० अमीर-चन्द, ब्र० कु० अचल तथा ब्र० कु० योगिनी (आस्ट्रेलिया) बैठी हैं।

रकसोल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन ब्लाक के पी इ ओ त्रिभुवनप्रसाद सिन्हा ने किया, साथ में भ्राता विश्व बाबू जी तथा ब्रह्माकुमारी बहनें खड़ी हैं

शोलापुर में शिव जयन्ती समारोह में भ्राता हिमांशु कुलकर्णी भाषण कर रहे हैं, साथ में उनकी धर्मपत्नी, प्रोफेसर कारनी भ्राता बेलजी, ब्र०कु० महानन्दी जी बैठी हैं।

वाराणसी में विश्व-कल्याण आध्यात्मिक मेले में पंडित अन्जनी नन्द मिश्र को चित्रों पर व्याख्या देती हुई ब्र० कु० सुरेन्द्र।

श्रीमती प्रमिला दण्डवते डाली में प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात ब्र० कु० भाई-बहनों के साथ खड़ी हैं।

आर्वी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी में ब्र० कु० अरुणाजी महाराष्ट्र के वन व रोजगार मन्त्रीभ्राता नाना भाऊ एम्बडगर जीको शिवका परिचय देते हुए।

धूम्रपान—आध्यात्मिक व स्वस्थ शरीर की दृष्टि से

डा० म० कुमार, रिटायर्ड प्रोफ़ेसर आफ़ सर्जरी, मेडिकल कालिज, इन्दौर

लेखक ने लोक-हित के लिये यह लेख लिख कर भेजा था। उन्हें ईश्वरीय सेवा में बहुत रुचि थी। अब उनका देहान्त हो चुका है।

—सम्पादक

आजकल धूम्रपान बहुत प्रचलित हो गया है। धूम्रपान छोटे बच्चों से लेकर बड़े बूढ़े तक करते हैं। लड़कियाँ व स्त्रियाँ भी इससे वंचित नहीं रहती हैं। अधिकतर देखने में आया है कि दूसरों को देख धूम्रपान में रुचि उत्पन्न होती है। इसी प्रकार बच्चों में भी बड़ों को देखकर पीने की ललक होती है। कुछ बचपन में ही और कुछ युवावस्था में पदार्पण करते ही उसे अपना लेते हैं और इसे समाज का एक प्रिय अंग समझते हैं।

धूम्रपान की ललक कुछ युवकों में कुछ समय के लिये और दूसरों में कुछ महीने के लिये रहकर एक स्वभाव का रूप धारण कर लेती है। यह एक लघु-कालीन घटना ही बनकर नहीं रह जाती परन्तु दीर्घ-कालीन समस्या बन जाती है।

स्वभाव इतना प्रबल हो जाता है कि हर समय धूम्रपान की धुन लगी रहती। कुछ तो निरन्तर पीने (Chain Smoker) के आदी बन जाते हैं। कुछ लोगों का कथन है कि धूम्रपान से एकाग्रता बढ़ती है और वह समस्या का हल आसानी से कर सकते हैं। कुछ इतने आदि हो जाते हैं कि धूम्रपान के पश्चात् ही वह शौच से निवृत होते हैं। कार्य करते समय सिग्रेट को मुँह में रखना एक फ़ैशन हो गया है। एक सर्जन यहाँ तक कि सिग्रेट पीते-पीते ही आपरेशन करते थे।

धूम्रपान करने के बहुत साधन हैं, जैसे सिगरेट, बीड़ी, हुक्का, सिगार, पाइप इत्यादि। सिग्रेट सैकड़ों प्रकार की होती है, मन्दी व तीव्र।

सिगरेट व बीड़ी के हर पैकेट पर लिखा रहता है कि धूम्रपान स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है परन्तु फिर भी धूम्रपान करने वालों की संख्या बढ़ती ही जाती है।

धूम्रपान से बहुत सी हानियाँ होती हैं।

(१) प्रायः देखने में आया है कि लोग सिग्रेट पीकर उसके बचे हुये ठूड (भाग) को जलते हुए कहीं भी फेंक देते हैं। यदि उसके सम्पर्क में कोई काग़ज़ व कपड़ा आता है तो आग लग जाती है और शनै-शनै आग भड़क जाती है। मकान, बिल्डिग, लकड़ी के पीठों में आग का विकराल रूप बन जाता है। उससे लाखों करोड़ों का नुक़सान ही नहीं होता, परन्तु मनुष्य व जानवर भी स्वाहाः हो जाते हैं। अभी कुछ महीने पहले १ मई को आगरे से लखेडा (म०प्र०) की ओर बस जा रही थी उसमें एक यात्री ने बीड़ी पीकर बस में ही फेंक दी, वहाँ पेट्रोल का टिन रखा था जिससे अग्नि भड़क उठी और कुछ ही देर में ३८ यात्री जल कर मर गये। बाद में एक की मृत्यु उज्जैन चिकित्सा-लय में हो गई। इस प्रकार ३९ यात्री एक छोटे से बीड़ी के जलते हुए टुकड़े से समाप्त हो गये—ऐसी भीषण दुर्घटना लोगों का कथन है, उन्होंने कभी नहीं देखी।

(२) धूम्रपान से कुछ रोग पैदा हो जाते हैं। तम्बाकू सेवन धमनियों को विशेष रूप से प्रभावित करता है। उनमें धमनी काठिन्य हो जाता है (Arte-rio Seterosis) धमनियाँ शरीर के किसी भाग की भी दूषित हो जाती है। फेफड़ों की, हृदय की और अंगों पर विशेष प्रभाव होता है—उससे धमनी काठिन्य के रूप में धमनी सिकुड़ जाती है।

(अ) धमनी काठिन्य के रक्त दाब बढ़ जाता

है। रक्त दाब या तो धूम्रपान के समय होता है या बाद में हो जाता है। रक्त दाब जब कुछ मात्रा में बढ़ता है तो कुछ भी लक्षण नहीं होते। जब रक्त दाब अधिक मात्रा में बढ़ता है तो सिर दर्द एक दुःख-दायक लक्षण होता है, यह दर्द सिर के पीछे की ओर, और गरदन के ऊपरी भाग में प्रायः होता है। सवेरे के समय जब रक्त दाब कम होता है तो सिर दर्द असहनीय होता है—यह प्रायः मानसिक तनाव के कारण होता है, न कि अधिक रक्त दाब के कारण होता है—चक्कर आना और साँस का फूलना यह दूसरे रक्त दाब के लक्षण होते हैं।

(ब) धूम्रपान का प्रभाव हृदय की धमनियों पर भी पड़ता है। कुछ लोगों का मत है धमनी काठिन्य के रोगी को धूम्रपान की ललक अधिक होती है। हृदय रोग साधारण भी होता है और तीव्र भी होता है, जिसका विशेष कारण हृदय की धमनियों का ऐंठना (spasm) या इनका सिकुड़ना। साधारण रोग में सीने में दर्द होता है परन्तु इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम (E.C.G) में कुछ परिवर्तन नहीं मिलता है—जब तीव्र होता है तो सीने में दर्द के साथ दिल में धड़कन, साँस का फूलना फेफड़ों द्रवोधिक्य (Congestion) होने से होता है। पैरों में सूजन आ जाती है और इ०सी०जी में साधारण से पर्याप्त मात्रा में परिवर्तन हो जाते हैं।

(स) धमनी काठिन्य (arterio seterosis) अंगों (हाथ व पैरों) की धमनियों को भी प्रभावित करता है। और इससे अंग का रक्त प्रवाह कम हो जाता है—रक्त प्रवाह की कमी कभी तो धीरे-धीरे होती है कभी तीव्र गति से। दोनों ही कारणों से अंगूठे उँगलियों व हाथ पैर में कोथ (Gaugrone) हो जाता है जिससे अंग काटना अनिवार्य हो जाता है। इस रोग को बर्जरस रोग (Burgers disease) कहते हैं।

(३) धूम्रपान का धुआँ गले से श्वास प्रणाली से होकर फेफड़ों में पहुँचता है। उसके व (nicotine) निकोटीन के कारण क्षोभ (Ciretarion) होता है जिससे ऑक्सीजन का रक्त में मिश्रण पूर्ण रूप से नहीं हो पाता है। इससे दूसरे भागों में ऑक्सीजन की मात्रा कम पहुँचती है और वह रोग ग्रस्त हो जाते हैं।

४. धूम्रपान से ही गले का, श्वास प्रणाली व फेफड़े का कैन्सर होता है—जो एक भयानक रोग है। यदि प्रारम्भिक स्थिति में इसका निदान हो जाता है तो धूम्रपान छोड़कर उपचार कराना चाहिये। रोग जब बढ़ जाता है तो धूम्रपान का निषेध अनिवार्य है और दूसरे जो सम्पर्क में आये वह भी बिल्कुल धूम्रपान न करें। यह भयंकर रोग है और रोगी के प्राण लेकर ही छोड़ता है।

यदि आप अच्छा व स्वस्थ जीवन जीना चाहते हैं तो धूम्रपान बिल्कुल बन्द कर दीजिये। यदि धूम्रपान की उत्सुकता बहुत ही तीव्र है तो पाइप व सिगार एक आध बार पी सकते हैं। वह इतने हानिकारक नहीं होते जितनी सिगरेट होती हैं परन्तु बिल्कुल धूम्रपान छोड़ना ही सबसे उत्तम है।

धूम्रपान न करने वाले मनुष्यों ने रेल-सेवा, वायु-सेवा बस-सेवा, थियेटर सिनेमा रेस्तरां व हॉस्पिटल अधिकारियों पर ज़ोर डाला है कि धूम्रपान इन जगहों में वर्जित होना चाहिये और इसके फलस्वरूप ऐसे स्थानों पर यह वर्जित घोषित कर दिया गया है। यदि कोई धूम्रपान करता है तो दूसरे मनुष्यों के अनुरोध पर धूम्रपान न करना चाहिये नहीं तो वह एक प्रकार का अपराध है। धूम्रपान करने वाले के लिये ही नहीं परन्तु दूसरे के लिये भी हानिकारक है और वातावरण भी प्रदूषित होता है। धूम्रपान करने वाले को दूसरे साथ में बैठे यात्रियों व साथियों से पूछ लेना चाहिये कि क्या वह धूम्रपान कर सकते हैं।

किसी भी हानिकारक परिणाम का मूल कारण अज्ञान है। यदि कोई कार्य करने से पहिले उस विषय से सम्बन्धित हानि का ज्ञान मिल जाता है तो प्राणी अवश्य ही उसके परिणामों से बच सकता है। उसके परिणामों को देखे तो यह बात स्पष्ट समझ में आती

है कि आज बाह्य ज्ञान के आधार पर मानव ने प्रकृति को समझने और उस पर विजय प्राप्त करने में सफलता तो प्राप्त कर ली है परन्तु वह अपने आपको भूल चुका है और अपनी प्रकृति व स्वभाव पर विजय पाने में असमर्थता प्रतीत करता है। फलस्वरूप उसके कर्म उसकी मूल प्रकृति आनन्द, शान्ति व प्रेम के विपरीत होते हैं और इससे विकारों के वशीभूत होता जाता है। माना कि धूम्रपान एक लघु विकार है परन्तु उसके परिणाम कितने भयंकर हो सकते हैं। कभी-कभी जानकारी होते हुये मनुष्य आज्ञानी बन जाता है।

बहुत से मनुष्य धूम्रपान छोड़ रहे हैं विशेषकर डाक्टर व शोध कार्य-कर्त्ता इसमें अग्रणी है।

धूम्रपान कम करने की एक विधि है—कुछ स्वयम् सिगरेट बनाकर पीते हैं। इससे पीना अवश्य कम हो जाता है परन्तु बिलकुल बन्द नहीं होता।

इस आदत को छुड़ाने की बहुत युक्तियाँ हैं।

१. डा० डी० टी० फ्रैडरिक्सन (Dr. D. T. Frederickson) जो न्यूयार्क में धूम्रपान की आदत छुड़ाने के प्रोग्राम के डायरेक्टर हैं। कहा है—

"हमें एक कदम पीछे जाकर यह सोचना चाहिये कि धूम्रपान के विषय में हमारी क्या जानकारी है। हमने कैसे प्रारम्भ किया था। यह एक औषधि व्यसन को तरह मनोवैज्ञानिक व्यसन नहीं है। यह एक गहराई तक घुसी हुई आदत है, जो शनै-शनै सीखने से एक दिल में धूम्रपान की ललक (Craving) पैदा होती है। प्रत्येक मनुष्य धूम्रपान छोड़ सकता है और इसके छोड़ने में एक प्रशिक्षण की आवश्यकता है। धूम्रपान छोड़ने वाले को वही करने की आवश्यकता है, जो धूम्रपान प्रारम्भ करते समय की थी। इसका आशय है धूम्रपान न करने की आदत डालना।

धूम्रपान करने वाले को धूम्रपान छुड़ाने की सफलता की ४ बातें आवश्यक हैं।

१. दिल में धूम्रपान छोड़ने की प्रबल इच्छा।

२. प्रशिक्षण का प्रोग्राम—एकदम छोड़ना या धीरे-धीरे छोड़ना—यह बहुत आवश्यक कदम है।

३. अपने कार्य को धूम्रपान के अभाव में करने की आदत डालना।

४. दूसरों को धूम्रपान न करते हुये अपनी इच्छा को तीव्र करना।

न्यूयार्क में इस तरह के प्रशिक्षण केन्द्र हैं जहाँ धूम्रपान के स्वभाव को धूम्रपान रहित प्रोग्राम में बदलना—उसके लिये क्या करना है?

"मैं धूम्रपान छोड़ दूंगा। मैं वास्तव में छोड़ना नहीं चाहता। मैं उससे वंचित रह जाऊँगा।" ऐसे विचार पराजित हुये मनुष्य के विचार हैं। इससे दृष्टिकोण नहीं बदल सकता है। दूसरी ओर ऐसे विचार—"धूम्रपान एक हानिकारक वस्तु है, इससे रक्त चाप, हृदय रोग, कैन्सर इत्यादि हो सकता है। अतः इसे छोड़ना अत्यन्त आवश्यक है और यह भी ध्यान देना है कि परमपिता परमात्मा हम बच्चों को शिक्षा देते हैं कि छोटे-छोटे विकार आगे चलकर हमारे स्वास्थ्य पर ही नहीं परन्तु बच्चों पर भी विपरीत प्रभाव डालते हैं।

ऐसे विचार धूम्रपान छोड़ने में सहायक होंगे।

एक और पहलू जो ध्यान देने योग्य है। धूम्रपान पर व्यय—एक सिग्रेट का कितना मूल्य है, अच्छी सिग्रेट कम-से-कम ७० पैसे की आती है।

इस संदर्भ में एक कहानी याद आती है। एक सज्जन ने दूसरे से पूछा—"तुम सिग्रेट पीते हो, कौन-सी पीते हो, प्रतिदिन कितनी पीते हो।"

उसने जवाब दिया "हाँ पीता हूँ इण्डिया किंग पीता हूँ और ३० सिग्रेट रोज़ पीता हूँ।"

"एक दिन का ख़र्च ४० रु० के लगभग हुआ, एक साल में ये करीब १४ हज़ार रुपये और तीस साल से पी रहे हैं तो आपने कोई ४ लाख से अधिक रुपया व्यय किया होगा और यदि आप सिग्रेट न पीते तो वह बिल्डिंग जो ४ लाख के करीब की होगी तुम्हारी

होती।

तो दूसरे सज्जन ने पहिले सज्जन से पूछा "क्या वह बिल्डिंग तुम्हारी है ?"

"नहीं।"

"मैं सिग्रेट भी पीता हूँ और वह बिल्डिंग भी मेरी है।"

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सिग्रेट पीने वाला बिल्डिंग नहीं बना सकता वह तो ऐशो-इशरत में पैसा लुटा सकता है। परन्तु अवश्य ही धन की काफ़ी बचत हो सकती है यदि धूम्रपान न किया जाए।

कैलिफोर्निया (California) विश्वविद्यालय की मनोवैज्ञानिक संस्था (Neuropsychio Institute) में इस विषय पर दो वैज्ञानिकों मिस्टर सॉल एम० शिफ़मेन (Mr. Saul M. shiffman) और डा० मरे ई० जारविक (D. Murray E. Jarvik) ने अनुसंधान किया है। इनका मत है कि धूम्रपान छोड़ने से वापिसी लक्षण (Withdrawl symptom) होते हैं वह हैं एकाग्रता की कमी, चिड़चिड़ापन और चिंतायुक्त हो जाता है। इनका मत है कि धूम्रपान का एकदम छोड़ना जिसे ठण्डी टर्की (cold tirkey) कहते हैं धीरे-धीरे छोड़ने से अधिक अच्छा है। धीरे-धीरे छोड़ने में यह लक्षण प्रायः पाये जाते हैं जो ठंडी टर्की में नहीं के बराबर होते हैं।

९० प्रतिशत धूम्रपान छोड़ने वालों का मत है कि धूम्रपान करने की ललक उन्हें संध्या के सात बजे सताती है और उनको पुनः धूम्रपान प्रारम्भ करने में सहायक होती है, जो ठण्डी टर्की को अपनाते हैं, उनके सामने यह समस्या नहीं आती है।

इन दोनों वैज्ञानिकों का मत है कि कुछ व्यसन पैदा करने वाले कुछ औषधियों को धीरे-धीरे छोड़ना लाभदायक रहता है। परन्तु धूम्रपान प्रभाव विपरीत होता है।

एक और दृष्टिकोण, जो धूम्रपान छोड़ने में सहायक होगा वह है राजयोग द्वारा धूम्रपान छोड़ना। सब विकारों की जड़ है देहाभिमान और पिछले बुरे संस्कार। मनुष्य ने अपने को शरीर ही समझा परन्तु अपने को एक अविनाशी आत्मा समझना चाहिये। अर्थात् देहाभिमान छोड़ देहीभिमानी समझना चाहिये। सब संग तोड़ कर एक परमपिता परमात्मा से नाता जोड़ेंगे तो सब विकारों से मुक्ति मिल जायेगी और धूम्रपान को, जो एक लघु विकार है छोड़ने में कोई कठिनाई नहीं होगी। ●

(ब्र० कु० विनोद, एडवोकेट, अजमेर)

पवित्रता की ओर

पुकारते परमात्मा अरे ! समझ से काम लो।
उठो, तजो विकारों को, पवित्रता का नाम लो॥

कहाँ वह सुख शान्ति है, कहाँ पवित्र रङ्ग है।
बिसारकर वो दिव्यता, क्यों भाईयो में जङ्ग है।
छोड़ के श्री की मत, क्या कुरूप ढङ्ग है।
तुम्हारी दुष्ट भावना से, व्योम आज दङ्ग है।
उड़ा दो विकार की लड़ी, स्नेह से ज्ञान-जाम लो।
उठो, तजो विकारों को, पवित्रता का नाम लो॥

मैं देश का हूँ, विदेश का मैं, क्यों भला ये टेक है।
हटाओ हद के नाम को, कहो कि विश्व एक है।
भारत विशाल विश्व में, एकता का प्रतीक है।
आत्मा-आत्मा भाई-भाई यह विचार नेक है।
हो देश अथवा विदेश से, बाबा का हाथ थाम ला।
उठो, तजो विकारों को, पवित्रता का नाम लो॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रावण के वंश हैं।
मनुष्यता और पवित्रता के, ये सभी तो दंश हैं।
देवता जो बन गया, वही तो आज हंस हैं।
शेष सभी इस विश्व पर, वही पुराने कंस हैं।
'प्योरिटी ही रॉयल्टी है', ये वरदान धार लो।
उठो, तजो विकारों को, पवित्रता का नाम लो॥

नहीं है शक्ति माया में, जो मेरी राह रोक ले।
कहाँ है रावण में वो बल, जो आज मुझको रोक ले।
त्याग दूँ विकारों को, 'मनमनाभव' के मन्त्र से।
दुनिया बनेगी स्वर्ग, आत्मिक शक्ति के यन्त्र से।
आओ सभी इस विश्व पर, ब्रह्मा का त्याग जान लो।
उठो, तजो विकारों को, पवित्रता का नाम लो॥ ●

स्मृति-दिवस तथा शिव जयन्ती के अवसर पर की गई ईश्वरीय सेवाएँ

(ले० ब्र० कु० सुन्दरलाल शक्तिनगर, दिल्ली)

पिता श्री स्मृति-दिवस के अवसर पर विभिन्न सेवा-केन्द्रों द्वारा आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों व राजयोग के अभ्यास का कार्यक्रम हुआ जिसके द्वारा पिताश्री ब्रह्मा की जीवन पर प्रकाश डाला गया तो 'परमपिता शिव' ने उनके माध्यम से जो शिक्षाएँ दी उनको व्यवहारिक जीवन में लाने की प्रेरणा दी गई। कई भाई-बहनों ने अपने अनुभव तथा जीवन में परिवर्तन का वर्णन भी किया तथा विश्व की समस्त आत्माओं के कल्याण की भावना से योग का दान भी दिया। इनमें से काठमण्डु (नेपाल) थाना, जयपुर, गोवा, अकोला, अंजार, फरुखाबाद, सतारा, शेगाँव माड्या, धारवाड, पारस, भोपाल, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर, ब्रह्मपुर गुमला, सोलापुर, कानपुर, लखनऊ, मेरठ, पूना, बम्बई, अम्बाला, आगरा, ग्वालियर, झाँसी, चण्डीगढ़, अमृतसर, जालन्धर, होशियारपुर, रोड़, हुबली, कटक, पुरी, भुवनेश्वर, बोकारो स्टील सिटी, कलकत्ता, नासिक, भीलवाडा, मुज्जफरपुर, मुज्जनगर, सिरोही, आबूरोड, पाली, माऊण्ट आबू, अहमदाबाद, तथा दिल्ली व नई दिल्ली के सेवा-केन्द्रों का नाम उल्लेखनीय है।

४५वाँ शिव-जयन्ती समारोह सभी सेवा-केन्द्रों ने बड़ी धूमधाम से मनाया। इस अवसर पर सार्वजनिक प्रवचनों, गीतों, सम्वाद, प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्टर शो द्वारा परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया गया तथा शिव-जयन्ती (शिव-रात्रि) मनाने का अर्थ व उसकी यथार्थ रीति स्पष्ट की गई। समाचार पत्रों, रेडियो व अन्य प्रसारण के साधनों द्वारा अनेकानेक आत्माओं की इस पावन पर्व की शुभ-बधाई दी गई तथा उन्हें खुशखबरी सुनाई गई कि कैसे 'परमपिता परमात्मा शिव' अज्ञान अन्धकार को मिटाने तथा ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए अवतरित हो चुके हैं तथा पिछले ४४ वर्षों से प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना का कार्य करा रहे हैं कुछेक सेवा-केन्द्रों द्वारा इस अवसर पर की गई सेवाओं का संक्षिप्त विवरण यहाँ उद्धृत करते हैं—

जालन्धर सेवा-केन्द्र से राज बहन लिखती है कि 'शिवध्वजारोहण' से इस समारोह का शुभारम्भ किया गया तथा हजारों लोगों ने सार्वजनिक प्रवचनों व साँस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। 'पंजाब केसरी', 'हिन्द समाचार', "जगवाणी", "प्रताप", इत्यादि समाचार-पत्रों में "शिव रात्रि का आध्यात्मिक महत्व" पर लेख भी प्रकाशित हुए।

श्रीगंगानगर से विद्या बहन लिखती हैं कि वहाँ के प्रसिद्ध स्वामी ब्रह्मदेव जी (श्री श्री १००८) द्वारा शिवध्वजारोहण के पश्चात् प्रवचनों व गीतों का कार्यक्रम हुआ जिससे हज़ारों लोगों ने परमात्मा शिव का परिचय पाया।

मालावाड से डा० सरोज बहन लिखती हैं कि वहाँ के जिला परिषद हाल में आयोजित समारोह से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया जिसमें वहाँ अतिरिक्त जिला अधिकारी व स्वास्थ्य अधिकारी आदि सम्मिलित हैं।

चण्डागढ़ से अचल बहन लिखती हैं कि वहाँ के पंचायत भवन में 'शिव जयन्ती' समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें हरियाणा के राज्यपाल

भ्राता जी० डी० तपा से मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। आस्ट्रेलिया से आई हुई बहनों ने अपना अनुभव सुनाया। छोटे-छोटे बच्चों ने 'राम-राज्य' की स्थापना का नाटक भी प्रस्तुत किया। इस अवसर पर शहर के प्रमुख भागों से प्रभात फेरी भी निकाली गई।

जगाधरी से कृष्णा बहन लिखती हैं कि वहाँ के प्राचीन शिव मन्दिर में जनता द्वारा आयोजित मेले में 'मन्दिर के प्राँगण में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों 'भक्तों' को 'परमात्मा शिव' का वास्तविक परिचय दिया गया।

जूनागढ़ से दमयन्ती बहन लिखती हैं कि परमात्मा शिव का सन्देश देने हेतु वहाँ के आर्युवैदिक कालेज तथा कृषि कालेज में आध्यात्मिक प्रवचन हुए जिससे अनेक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने लाभ उठाया। इसी प्रकार वहाँ के निकटवर्ती ग्रामों में आयोजित प्रदर्शनी से भी हजारों लोगों ने परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया।

महू से प्रभा बहन लिखती हैं कि इस पावन पर्व के शुभ अवसर पर वहाँ के प्रमुख स्थान पर 'ईश्वरानुभूति आध्यात्मिक सम्मेलन' का आयोजन किया गया जिसमें वहाँ के मेजर जनरल भ्राता एस० एल० मल्होत्रा मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। इस सम्मेलन से हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इसका समाचार "नई दुनिया", 'विश्व-भ्रमण', 'इन्दौर समाचार', व 'नवभारत' आदि समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ।

करौली उप-सेवा-केन्द्र की ओर से आयोजित समारोह में वहाँ के वरिष्ठ चिकित्सक भ्राता श्याम बाबू गुप्त मुख्य अतिथि के रूप पधारे थे। अनेकानेक आत्माओं ने सार्वजनिक प्रवचनों व गीतों द्वारा परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय पाया।

सहारनपुर सेवा केन्द्र की ओर से शहर के मुख्य भागों से प्रभात फेरी निकाली गई तथा सार्वजनिक प्रवचनों द्वारा अनेकानेक आत्माओं को परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय दिया।

नांदेड़ सेवा केन्द्र की ओर से बासर नामक स्थान पर शिवदर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों को 'पवित्र और योगी' बनने का इश्वरीय सन्देश दिया।

जोधपुर सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ की जेल, शनिमन्दिर, मुख्य बाजार घण्टाघर, व लूनी ग्राम में आध्यात्मिक प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

धारवाड़ सेवा-केन्द्र की ओर से 'पिताश्री द्वितीय अन्तर कालेज स्पर्धा' का आयोजन किया गया जिसमें दस कालेजों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। कर्नाटक साईन्स कालेज के विजेता विद्यार्थी को भ्राता वसवराज ने शील्ड प्रदान की।

अजमेर सेवा-केन्द्र की ओर से विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो, व प्रवचनों का कार्यक्रम सफलतापूर्वक हुआ तथा हरिजनों व विकलाँगों की विशेश सेवा की गई।

वारंगल सेवा-केन्द्र की ओर से आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के डिप्टो-कलेक्टर ने किया। अनेकानेक आत्माओं ने इससे लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त **विजयवाड़ा की जेल में** आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों के कार्यक्रम से सैकड़ों कैदियों व अधिकारियों ने लाभ उठाया।

अकोला सेवा-केन्द्र की ओर से चिंचोली ग्राम में राजयोग प्रदर्शनी एवं शिविर का आयोजन किया गया जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त महिला संगठन तथा स्नेह मिलन का कार्यक्रम भी बहुत ही सफल रहा।

बरनाला, हुबली, मोतिहारी, काठमाण्डु (नेपाल), गुलबर्गा, अहमदाबाद (मणीनगर), पाली, बड़ाली, भाव नगर, कटनी, हिंगण घाट, रायपुर, पाली, सिन्दरी, इलाहाबाद, आर्वी, झाँसो, जेतपुर, बुरहान पुर, सोलापुर, कोल्हापुर, पूना, भावनगर, पाटन, कलाँवाली, कासगंज, नेलूर, हुबली जोन, बड़ौदा, तिरुपति, सिरोही, राजकोट, राँची, इन सभी सेवा केन्द्रों पर भी प्रदर्शनी तथा सेवायें हुईं। ●

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, 151 ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D N) 178

विश्व कल्याण महोत्सव में लगे अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक मेले के मण्डपों का एक दृश्य

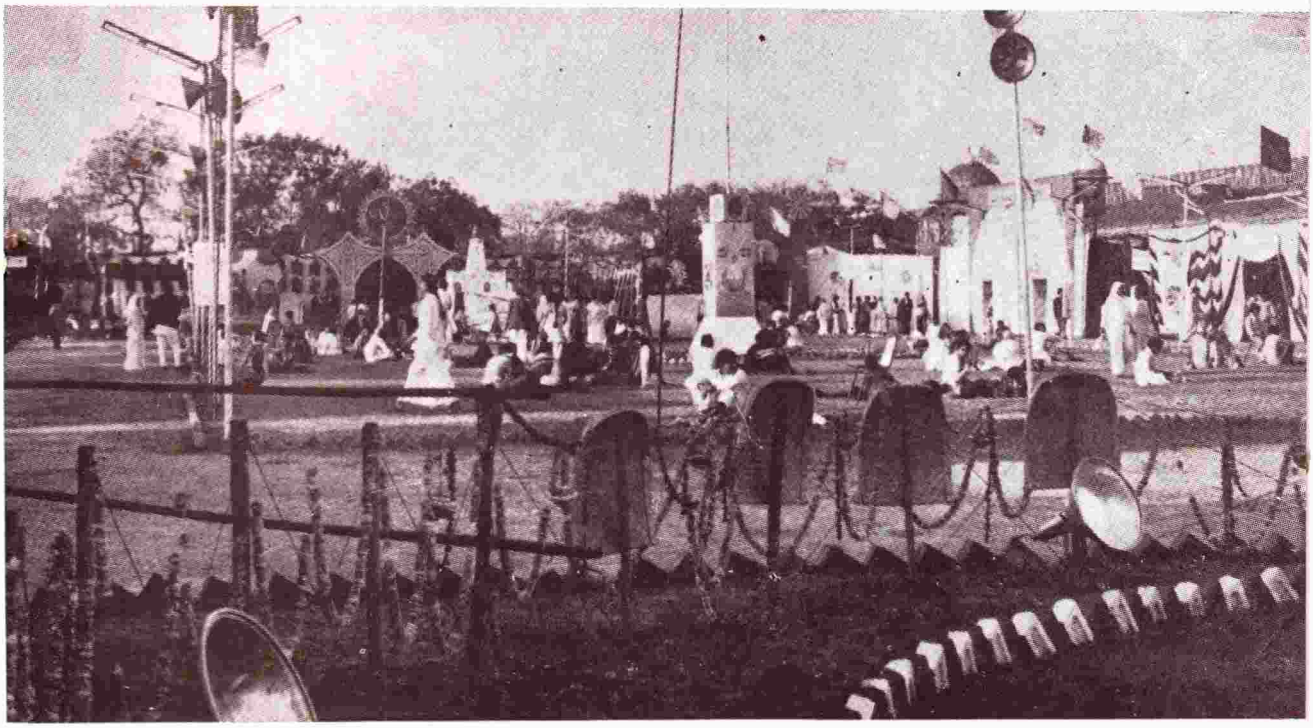

विश्व-कल्याण महोत्सव में सभा मण्डप के भीतर की एक झलक

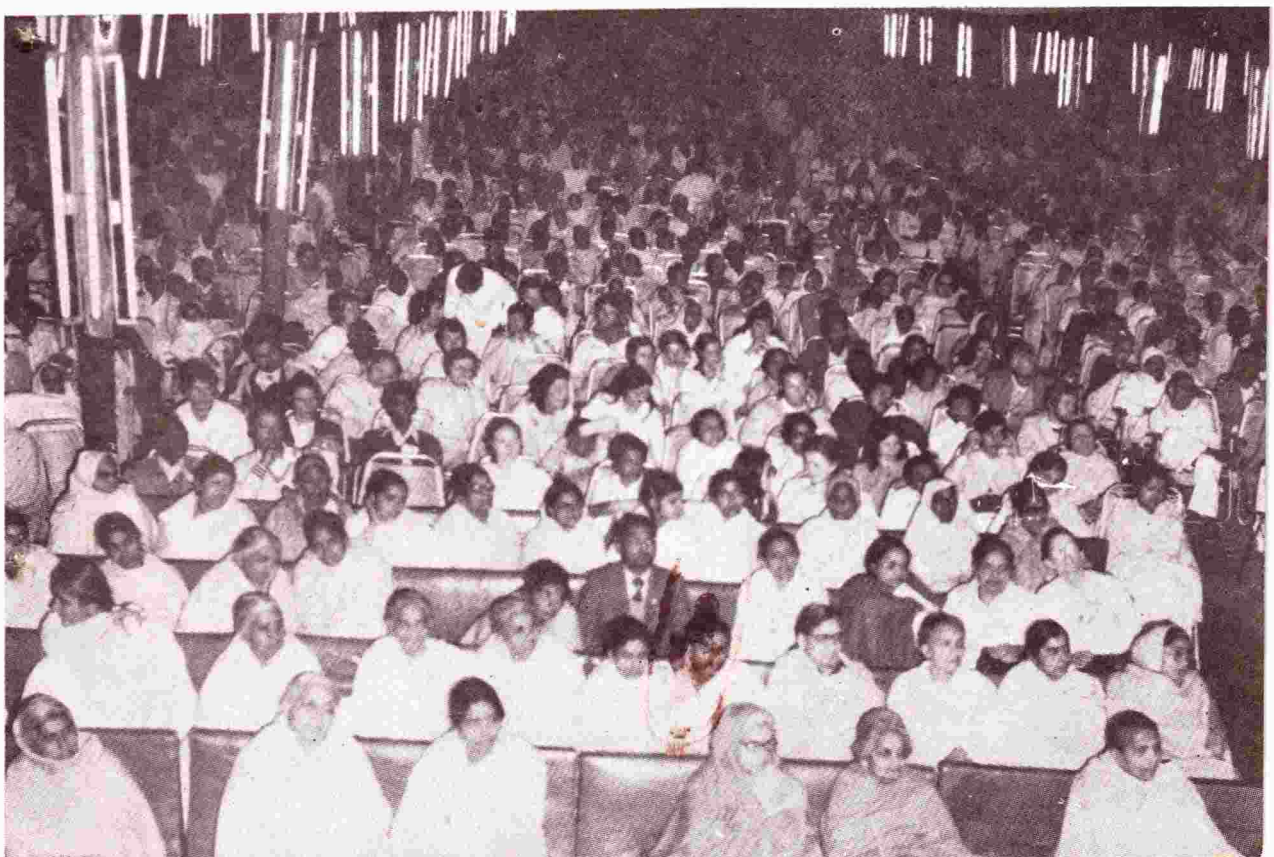

Regd No. D (DN) 178

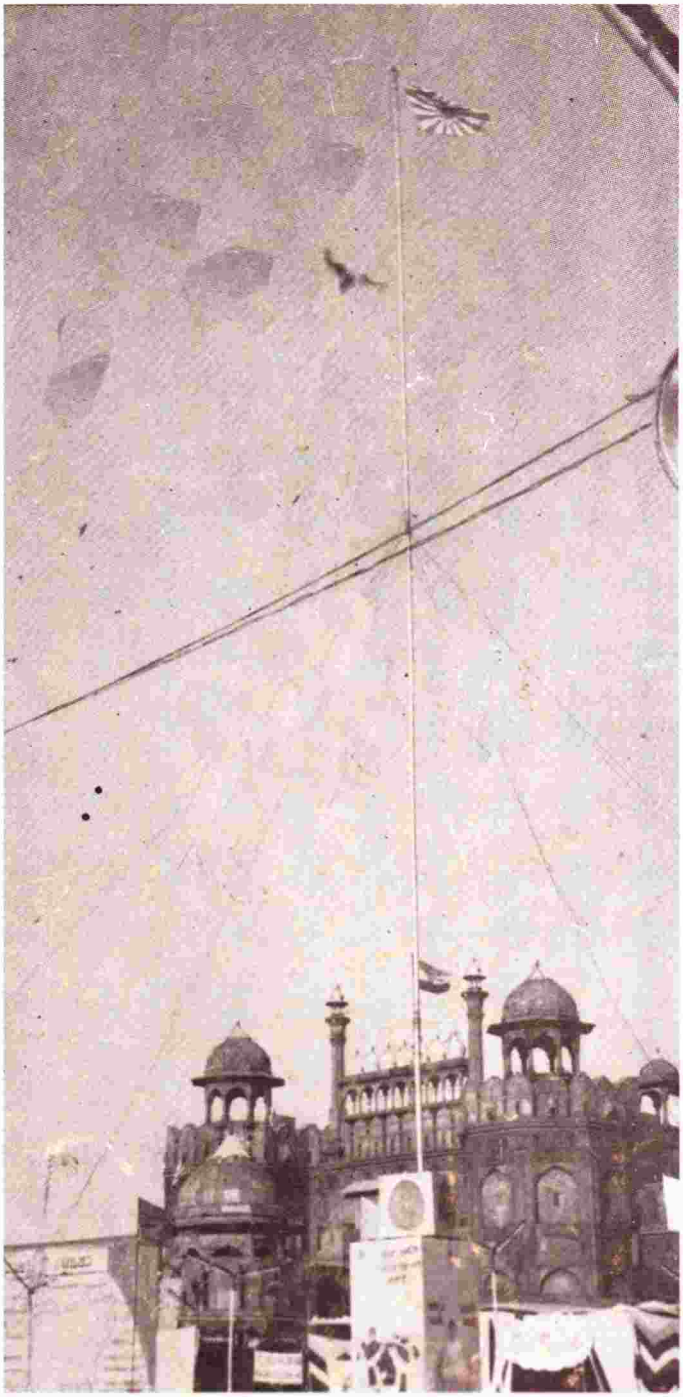

दिल्ली में लाल किला मैदान पर विश्व-कल्याण महोत्सव के अवसर पर शिव ध्वज आकाश में फहरा रहा है। पृष्ठ भूमिका में लाल किला और उस पर फहराता हुआ राष्ट्र ध्वज दिखाई दे रहे हैं।

दिल्ली में विश्व-कल्याण महोत्सव के अवसर पर निकाली गयी शोभा यात्रा का एक दृश्य।

विश्व-कल्याण महोत्सव के प्रारम्भ में धर्म-नेताओं का समागम। मध्य में ब्रह्मा-कुमारी आत्म इन्द्रा जी तथा केन्द्रीय मंत्री पी० सी० सेठी बैठे हैं।